वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 201
ISBN 978-93-80353-54-8

नवग्रहशांति विधान

–रचयित्री –

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

शरदपूर्णिमा महोत्सव, 11 अक्टूबर 2011 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में
पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित
''प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर वर्ष'' के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

COURTESY—JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

आठवाँ संस्करण वीर नि. सं. 2538, द्वि. भाद्रपद शुक्ला 4 मूल्य
2200 प्रतियाँ दशलक्षण महापर्व-19 सितम्बर 2012 20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशक एवं सम्पादक :–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

–: प्रबंध सम्पादक :–

बाल ब्र. जीवन प्रकाश जैन

(सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन)

प्रथम संस्करण-2200 प्रतियाँ (सन् 1999), द्वितीय-2200 प्रतियाँ (सन् 2003),
तृतीय-2200 प्रतियाँ (सन् 2005), चतुर्थ-1100 प्रतियाँ (सन् 2008), पंचम-1100 प्रतियाँ (सन् 2008)
छठा-3300 प्रतियाँ (सन् 2008), सातवाँ-2200 प्रतियाँ (सन् 2010)

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी

The Literature is the mirror of Society.

अर्थात् साहित्य समाज का दर्पण है। आज के भौतिकवादी युग में जब प्राणी अपनी व्यस्ततम जिन्दगी में अनेकों सांसारिक कार्यों को करते हुए कभी-कभी अत्यन्त कठिनाइयों का अनुभव करता है, तब वह अपनी जन्मकुण्डली आदि के माध्यम से ग्रहस्थिति के बारे में जानने हेतु नाना प्रकार के उपक्रम करता है और उसकी शांति हेतु कई उपाय भी करते देखा जाता है।

जैनधर्मानुसार कर्मसिद्धान्त की प्रधानता होते हुए भी व्यवहारिक निमित्तों में ग्रहों का महत्वपूर्ण स्थान है। ये ग्रह नौ होते हैं, जिनकी शांति के लिए लोगों को प्रायः नवग्रह अरिष्ट निवारक पूजा-विधान आदि करते पाया गया है, उसी क्रम में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से उनकी सुशिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने नवग्रहों की शांति हेतु नौ तीर्थंकर भगवन्तों की सुन्दर पूजा विधान की रचना की है, जो नई-नई धुनों पर आधारित होने के कारण अत्यन्त रोचक है।

अपनी सारभूत एवं आगमोक्त लेखनी द्वारा समय-समय पर भक्तों को अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत आदि भाषाओं में भजन, पूजन, चालीसा, विधान, स्तोत्र आदि रचनाओं के द्वारा नई दिशा दिखाने वाली प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी एक सिद्धहस्त लेखिका हैं। उनके द्वारा रचित अनेक कृतियों में से ''नवग्रह शांति विधान'' नामक इस कृति को भी वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला द्वारा सम्पादित करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह विधान ग्रहचक्रों से दुखी सभी प्राणियों के ग्रहों की शांति कर मनवाञ्छित फल का प्रदाता होवे, यही मंगल भावना है।

नवग्रहशांति कारक मंत्र

– गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी

नवग्रहस्तोत्र को पढ़ने की एवं नवग्रह विधान को करने की परंपरा जैन समाज में हमेशा से चली आ रही है। ज्योतिषी पंडितों के कहे अनुसार किसी की जन्मकुंडली में कौन से ग्रहों का अशुभ योग चल रहा है, यह जानकर जैन बंधु भी गुरुओं के पास आकर शांति का उपाय पूछते हैं तब उन्हें उन-उन ग्रहों के स्वामी तीर्थंकर भगवंतों की पूजा करने का एवं मंत्र जपने का उपाय बताया जाता है। यह व्यवस्था प्राचीन है आज की नहीं है। यद्यपि ये ग्रह – सूर्य, चंद्रमा, शनि आदि किसी का कुछ भी बिगाड़ या सुधार नहीं करते हैं। ये सब अपनी-अपनी गति से गमन कर रहे हैं। फिर भी ये संसारी लोगों के सुख-दुःख में निमित्त अवश्य बन जाते हैं। जैसे कोई श्रेष्ठी व्यापारिक कार्य के लिए प्रस्थान कर रहे हैं, सामने यदि मोर नाचते हुए दिख जाए या मंगल कलश आदि शकुन दिख जावे तो व्यापार में लाभ हो जाता है, जिस कार्य के लिए प्रस्थान है उस कार्य की सिद्धि हो जाती है। यदि इससे विपरीत किसी के प्रस्थान के समय सामने बिल्ली आ जावे, रोने लगे आदि, तो प्रस्थान करने वालों के कार्यों की सिद्धि न होकर हानि देखी जाती है। इसमें न तो मोर ने कुछ सोचा, न कुछ किया। न बिल्ली ने कुछ सोचा, न किया। ये निमित्त मात्र हैं। वैसे ही इन ग्रहों की गति का योग समझना चाहिए। फिर भी अशुभ योग की शांति के लिए तीर्थंकर भगवंतों की पूजा ही सक्षम है।

लगभग दश वर्ष पूर्व मेरे मन में नवग्रहशांति जिनमंदिर को बनवाने की भावना जाग्रत हुई थी। तब मैंने इस विषय में ग्रंथों का अवलोकन शुरू किया। एक ग्रंथ में नवग्रह यंत्र उपलब्ध हुआ जो कि नव भगवंतों का था, देखकर प्रसन्नता हुई। तभी मैंने उस आधार से ताम्रपट्ट पर 'नवग्रहशांतियंत्र' में नव भगवंतों के चरण बनवाए जो कि अनेक मंदिरों में विराजमान किये गये। पुनः हस्तिनापुर त्रिमूर्ति मंदिर में एक अष्ट दल का कमल बनवाकर उस पर कर्णिका समेत धातु के 5-5 इंची के नव भगवान विराजमान कराये। मांगीतुंगी में सुधबुध गुफा के पास भी मेरी प्रेरणा से नवग्रह के भगवंतों के नव चरण विराजमान हुए हैं।

पुनः भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में नंद्यावर्त महल परिसर में एक 'नवग्रहशांति जिन मंदिर' बनाया गया। इसमें नव भगवान विराजमान किये गये हैं। जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में भी नवग्रह शांति जिनमंदिर की पंचकल्याणक

प्रतिष्ठा दिनाँक 7 से 11 फरवरी 2008 तक सम्पन्न हुई है। यहाँ अष्टधातु में निर्मित नवग्रह के अरिष्ट को दूर करने वाले नव तीर्थंकर भगवन्तों की बड़ी-बड़ी प्रतिमाएँ सुन्दर कमलासनों पर विराजमान की गई हैं। साथ ही प्रयत्न करने पर दक्षिण से नवग्रह के स्वामी नव प्रतिमाओं का एक चित्र भी प्राप्त हुआ। यह चित्र 'भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ' भाग-5, कर्नाटक पुस्तक में भी उपलब्ध हुआ है। इन्हीं नव भगवन्तों के नव-नव मंत्र भी उपलब्ध हुए हैं। उन्हें यहाँ दे रहे हैं।

मैंने सन् 1999 में इन नवग्रहों के नवभगवंतों का यह 'नवग्रहशांति विधान' आर्यिका चंदनामती से बनवाया है जो कि अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

नवग्रह शांतिकर नवतीर्थंकर भगवान–

श्री जिनसागरसूरि रचित नवग्रहशांति विधान है। उसमें भी एक-एक ग्रहों की शांति हेतु एक-एक तीर्थंकर के नाम हैं। यथा–

अर्के पद्मप्रभश्चैव, सोमे चन्द्रप्रभस्तथा।
मंगले वासुपूज्यश्च बुधे मल्लिजिनेश्वरः।।1।।
गुरौ तु वर्धमानश्च शुक्रे पुष्पजिनेश्वरः।
राहौ नेमिजिनेंद्रः स्याच्छनौ च मुनिसुव्रतः।।2।।
केतौ तु पार्श्वनाथश्चेत्येते नवग्रहाधिपाः।
कल्याणं संततं कुर्युः भव्यं भव्यैकसंहतेः।।3।।

सूर्य ग्रह के लिए पद्मप्रभ, सोमग्रह के लिए चंद्रप्रभ, मंगलग्रह हेतु वासुपूज्य, बुधग्रह के लिए मल्लिनाथ, गुरुग्रह हेतु वर्धमान, शुक्रग्रह हेतु पुष्पदंतनाथ, शनिग्रह हेतु मुनिसुव्रतनाथ, राहुग्रह हेतु नेमिनाथ एवं केतुग्रह के लिए पार्श्वनाथ भगवान हैं। ये इन नवग्रहों के स्वामी माने हैं।

इनके बृहद् नवमंत्र अन्यत्र उपलब्ध हैं–

1. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्मप्रभतीर्थंकराय कुसुमयक्ष-मनोवेगायक्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं हृः आदित्यमहाग्रह! मम (.....[1]) सर्वदुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं कुरु कुरु सर्वशांतिं कुरु कुरु सर्वसमृद्धिं कुरु कुरु इष्टसंपदां कुरु कुरु अनिष्टनिवारणं कुरु कुरु धनधान्यसमृद्धिं कुरु कुरु काममांगल्योत्सवं कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। (7000 जाप्य)

अथवा–**1. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्मप्रभतीर्थंकराय कुसुमयक्ष-मनोवेगायक्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं हृः आदित्यमहाग्रह मम (.....) दुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्वशांतिं च कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। (7000 जाप्य)**

1. यहाँ जिनके लिए मंत्र जपना है, षष्ठी विभक्ति लगाकर उनका नाम लेना चाहिए। जैसे 'प्रकाशचन्द्रस्य' आदि।

2. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते चन्द्रप्रभतीर्थंकराय विजययक्षज्वाला-मालिनीयक्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं हृः सोममहाग्रह! मम (.....) दुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्वशांतिं च कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। (11000 जाप्य)

3. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते वासुपूज्यतीर्थंकराय षण्मुखयक्षगांधारीय-क्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं हृः कुजमहाग्रह! मम (.....) दुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्वशांतिं च कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। (10000 जाप्य)

4. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मल्लिनाथतीर्थंकराय कुबेरयक्षअपरा-जितायक्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं हृः बुधमहाग्रह! मम (.....) दुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्वशांतिं च कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। (14000 जाप्य)

5. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते वर्धमानतीर्थंकराय मातंगयक्षसिद्धायिनी-यक्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं हृः गुरुमहाग्रह! मम (.....) दुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्वशांतिं च कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। (19000 जाप्य)

6. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अजितयक्षमहा-कालीयक्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं हृः शुक्रमहाग्रह! मम (.....) दुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्वशांतिं च कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। (16000 जाप्य)

7. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय वरुणयक्ष-बहुरूपिणीयक्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं हृः शनिमहाग्रह! मम (.....) दुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्वशांतिं च कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। (23000 जाप्य)

8. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते नेमिनाथतीर्थंकराय सर्वाण्हयक्ष-कूष्माण्डीयक्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं हृः राहुमहाग्रह! मम (.....) दुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्वशांतिं च कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। (18000 जाप्य)

9. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वनाथतीर्थंकराय धरणेन्द्रयक्षपद्मावती-यक्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं हृः केतुमहाग्रह! मम (.....) दुष्टग्रहरोग-कष्टनिवारणं सर्वशांतिं च कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। (7000 जाप्य)

इनके लघु मंत्र भी इस प्रकार हैं–

1. ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक-श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

2. ॐ ह्रीं सोमग्रहारिष्टनिवारक-श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

3. ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारक-श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

4. ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक-श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

5. ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक-श्री महावीरजिनेन्द्राय नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

6. ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक-श्री पुष्पदन्तनाथजिनेन्द्राय नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

7. ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक-श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

8. ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्टनिवारक-श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

9. ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारक-श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

णमोकार महामंत्र के एक-एक पद भी एक-एक ग्रह की शांति के लिए माने गये हैं, जो कि सूर्य, चन्द्र आदि के नंबर से दिये गये हैं–

1. ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। (7000 जाप्य)
2. ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं। (11000 जाप्य)
3. ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। (10000 जाप्य)
4. ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं। (14000 जाप्य)
5. ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं। (19000 जाप्य)
6. ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं। (10000 जाप्य)
7. ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं। (23000 जाप्य)
8. ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं। (18000 जाप्य)
9. ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं। (10000 जाप्य)

सर्वत्र 'जिनवाणी' एवं 'पूजा पाठ प्रदीप' आदि में नवग्रहों के स्वामी चौबीसों तीर्थंकर माने हैं। इन्हें भिन्न-भिन्न ग्रहों में विभक्त किया है–

अथ नवग्रहशांति स्तोत्रम्

जगद्गुरुं नमस्कृत्य श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम्।
ग्रहशांतिं प्रवक्ष्यामि लोकानां सुखहेतवे।।1।।

जिनेन्द्राः खेचरा ज्ञेयाः, पूजनीया विधिक्रमात्।
पुष्पैर्विलेपनैर्धूपैर्नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे।।2।।

पद्मप्रभस्य मार्तण्डश्चन्द्रः चन्द्रप्रभस्य च।
वासुपूज्यस्य भूपुत्रो बुधश्चाष्टजिनेशिनाम् ।।3।।

विमलानन्तधर्माराः-शांतिःकुंथुर्नमिस्तथा।
वर्धमानजिनेन्द्रस्य पादपद्मं बुधो नमेत् ।।4।।

ऋषभाजितसुपार्श्वाः साभिनंदनशीतलौ।
सुमतिः संभवस्वामी, श्रेयसश्च वृहस्पतिः।।5।।

सुविधिः कथितः शुक्रे, सुव्रतश्च शनिश्चरे।
नेमिनाथो भवेद् राहोः केतुश्चमल्लिपार्श्वयोः।।6।।

जन्मलग्नं च राशिश्च, यदि पीडयंति खेचराः।
तदा संपूजयेत् धीमान्, खेचरान् सह तान् जिनान् ।।7।।

आदित्यसोममंगल-बुधगुरुशुक्राः शनिः।
राहुकेतुमेरवाग्रे[1] यो जिनपूजाविधायकः।।8।।

जिनागारे गतः कृत्वा, ग्रहाणां तुष्टिहेतवे।
नमस्कारशतं भक्त्या जपेदष्टोत्तरं शतम् ।।9।।

भद्रबाहुगुरुर्वाग्मी पंचमः श्रुतकेवली।
विद्याप्रसादतः[2] पूर्वं ग्रहशांतिः विधिः कृता।।10।।

यः पठेत् प्रातरुत्थाय शुचिर्भूत्वा समाहितः।
विपत्तितो भवेच्छांतिः क्षेमं तस्य पदे पदे।।11।।

भावार्थ– सूर्यग्रह की शांतिहेतु पद्मप्रभ, सोमग्रह के लिए चन्द्रप्रभ, मंगलग्रह शांति हेतु वासुपूज्य, बुधग्रह के लिए श्री विमल, अनंत, धर्म, शांति, कुंथु, अर, नमि एवं वर्धमान ये आठ तीर्थंकर हैं। गुरुग्रह हेतु श्री ऋषभदेव, अजित, संभव, अभिनंदन, सुमति, सुपार्श्व, शीतल और श्रेयांस ये आठ तीर्थंकर हैं। शुक्रग्रह हेतु पुष्पदंतनाथ, शनिग्रह शांति हेतु मुनिसुव्रतनाथ, राहुग्रह हेतु नेमिनाथ तथा केतुग्रह हेतु मल्लिनाथ एवं पार्श्वनाथ ये दो तीर्थंकर कहे गये हैं। यदि सूर्य, सोम आदि ये ग्रह अनिष्टकारक हों तो उपर्युक्त तीर्थंकरों की पूजा करना चाहिए।

श्रीभद्रबाहु महामुनि पांचवें श्रुतकेवली हुए हैं। उनके प्रसाद से यह ग्रहशांति विधि प्राप्त हुई है। जो भव्य प्रातः इस ग्रहशांति स्तोत्र को पढ़ते हैं, वे विपत्ति से छुटकारा पाकर पद-पद पर क्षेम-कल्याण प्राप्त करते हैं।

नवग्रहशांति के हेतु नवमंत्र–

1. ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा। (7000 जाप्य)

2. ॐ ह्रीं क्रौं श्रीं क्लीं चन्द्रग्रहारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभजिनेंद्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा। (11000 जाप्य)

---

1. यह पाठ समझ में नहीं आया है। 2. विद्यानुवादतः इत्यपि पाठः लभ्यते।

3. ॐ आं क्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं भौमग्रहारिष्टनिवारक श्री वासुपूज्यजिनेंद्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा। (10000 जाप्य)

4. ॐ ह्रीं क्रौं आं श्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक-श्रीविमलानंतधर्मशांति-कुंथु-अरनमिवर्धमानाष्टजिनेंद्रेभ्यो नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा। (8000 जाप्य)

5. ॐ आं क्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं गुरुग्रहारिष्टनिवारक-ऋषभाजितसंभवाभिनंदनसुमति सुपार्श्वशीतलश्रेयांसाष्टजिनेंद्रेभ्यो नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा। (19000 जाप्य)

6. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा। (11000 जाप्य)

7. ॐ ह्रीं क्रौं ह्रः श्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक-श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमः। (23000 जाप्य)

8. ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ह्रः राहुग्रहारिष्टनिवारक श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय नमः। (18000 जाप्य)

9. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं केतुग्रहारिष्टनिवारक श्रीमल्लिनाथ-पार्श्वनाथजिनेन्द्राभ्यां नमः। (7000 जाप्य)

इस प्रकार इन दोनों-नवग्रह स्तोत्र, मंत्र व विधान को प्रमाणीक मानकर पूजा, मंत्र आदि करते रहना चाहिए।

नवग्रह व्रत विधि–

वर्ष में तीन बार आष्टान्हिक पर्व आता है। उन्हीं पर्वों में एक दिन पहले से यह व्रत किया जाता है। जैसे कि आषाढ़ शुक्ला सप्तमी से आषाढ़ शु. पूर्णिमा तक। कार्तिक शु. सप्तमी से पूर्णिमा तक एवं फाल्गुन शु. 7 से पूर्णिमा तक ऐसे वर्ष में तीन बार यह व्रत करना चाहिए। अधिकतम यह व्रत नव वर्ष तक 27 बार अथवा कम से कम तीन वर्ष 3×3=9 बार यह व्रत किया जाता है। इस व्रत में पूर्व में कहे गये मंत्रों की क्रम से जाप्य करना चाहिए एवं 'नवग्रह पूजा विधान' से एक-एक पूजाएं करना चाहिए। व्रत पूर्ण होने पर यथाशक्ति उद्यापन करना चाहिए।

इस प्रकार जो इन नवग्रहों की शांति के लिए जाप्य, पूजा एवं व्रत आदि करते हैं वे निश्चित ही अपने सर्व ग्रहों को अनुकूल, सिद्धिकारक बनाकर संसार के सर्वसुखों को प्राप्त कर परंपरा से मोक्ष को भी प्राप्त करेंगे।

प्रस्तावना

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

चार गतियों में से देवगति का एक भेद है-ज्योतिर्वासीदेव। ये ज्योतिषी देव मध्यलोक के आकाशमण्डल में स्थित अपने-अपने विमानों में रहकर धरती के प्राणियों पर भी अपना प्रभाव डालते हैं। मनुष्य जिस समय माँ के गर्भ से उत्पन्न होता है, उसी समय उसकी जन्मतिथि के साथ-साथ समय, ग्रह, सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, योग आदि को ध्यान में रखते हुए माता-पिता ज्योतिषी से संतान की जन्मकुंडली बनवाकर पूछते हैं कि इसका भविष्य शुभ है अथवा अशुभ?

कुंडली में स्थित ग्रहचक्रों के अनुसार ज्योतिषी की भविष्यवाणी उसके शुभाशुभ की घोषणा करती है और तभी से परिवार के लोग अपनी चिन्तानिवारण हेतु तरह-तरह के उपक्रम में लग जाते हैं। कहते हैं कि बालक या बालिका आदि मूल नक्षत्र में उत्पन्न हुए हैं तो पिता पर संकट आता है अतः उसकी शांति का पुरुषार्थ तुरंत करना चाहिए। इसी प्रकार सूर्य, चन्द्रमा एवं ग्रहों का संचार भी देखा जाता है कि चन्द्रमा किस राशि में था? सूर्य किस महादशा अथवा निम्न दशा में था?.....इत्यादि।

यद्यपि जैन सिद्धान्त में कर्मव्यवस्था को ही सर्वाधिक बलवान् मानकर उनसे लड़ने का मार्ग हमारे तीर्थंकरों ने बतलाया है, फिर भी व्यवहारिक बाह्य निमित्तों में ग्रह आदि का भी महत्वपूर्ण स्थान माना है। ये ग्रह नव माने गये हैं-सूर्य,चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु। इन नव ग्रहों के अधिपति देवता पूर्व जन्म के वैर या मित्रतावश अथवा इस जन्म में मात्र क्रीड़ा आदि के निमित्त से लोगों को सुख-दुःख पहुँचाते रहते हैं अर्थात् उच्च स्थान वाले ग्रह प्राणियों को उच्चपद, यश, धन, आरोग्यता की प्राप्ति कराते हैं एवं निम्नस्थान में पड़े ग्रह अपयश, आर्थिक हानि, शारीरिक-मानसिक व्याधियाँ उत्पन्न कराते हैं इसीलिए संसारी मानव इनकी शांति के उपाय करते हैं।

नवग्रह अरिष्टनिवारक पूजा, विधान एवं स्तोत्र की परम्परा काफी दिनों से हमारे समाज में चल रही है, जिसके माध्यम से भक्तगण चौबीसों तीर्थंकरों की आराधना करते हैं। पहले की जो कवि ''मनसुख'' द्वारा रचित नवग्रह की समुच्च्यपूजन है उसमें भी चौबीसों तीर्थंकर के नाम लिए हैं तथा विधान में जब अलग-अलग प्रत्येक ग्रह की पूजा करते हैं तो क्रम से सूर्यग्रह अरिष्ट निवारण

हेतु पद्मप्रभ जिनेन्द्र की पूजा, चन्द्रग्रह में चन्द्रप्रभ, मंगलग्रह में वासुपूज्य, बुधग्रह में विमल, अनन्त, धर्म, शांति, कुंथु, अरह, नमि और वर्धमान इन आठ भगवन्तों की, गुरुग्रह में ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन, सुमति, सुपारस, शीतल और श्रेयांस इन आठ जिनेन्द्रों की, शुक्रग्रह में पुष्पदन्त भगवान, शनिग्रह में मुनिसुव्रत जिनेन्द्र, राहुग्रह में नेमिनाथ भगवान तथा केतुग्रह में मल्लिनाथ एवं पार्श्वनाथ भगवान् की पूजा होती है। इसी प्रकार अलग-अलग ग्रहों की जाप्य में उपर्युक्त क्रमानुसार चौबीसों तीर्थंकर समाविष्ट किये गये हैं किन्तु इस ''नवग्रहशांति विधान'' में नवग्रह के अरिष्ट निवारण करने वाले मात्र नौ तीर्थंकरों की ही पूजन है। इसमें प्रमुख कारण यह है कि 6-7 वर्ष पूर्व पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने एक प्राचीन जिनवाणी संग्रह में नवग्रह शांतिकारक नव तीर्थंकरों के नाम प्राप्त किये सो उसी प्रमाणानुसार उन्होंने एक नवग्रहशांति यंत्र बनवाया जिसमें नव भगवन्तों के चरणचिन्ह हैं। पूज्य माताजी ने मुझे भी इसी प्रमाणानुसार नवग्रह का लघु विधान लिखने की प्रेरणा प्रदान की अतः यह नूतन कृति मैंने अपनी अल्पबुद्धि से रचकर गुरु के करकमलों में समर्पित की है।

प्राचीन काल से ही जैन आगम में नवग्रहों की शांति हेतु नवग्रहशांति स्तोत्र-पाठ, पूजन, विधान इत्यादि करने की परम्परा रही है। इस युग के अंतिम श्रुतकेवली मुनिराज भद्रबाहु के द्वारा रचित नवग्रहशांति स्तोत्र में नौ ग्रहों की शांति हेतु चौबीसों तीर्थंकरों का क्रम बताया है, स्तोत्र का मैंने हिन्दी पद्यानुवाद किया है जो कि पृष्ठ नं. 61-62 पर प्रकाशित है तथा जिनसागरसूरि रचित नवग्रह स्तोत्र एवं दक्षिण भारत से प्राप्त प्रमाण एवं प्राचीन अन्य पुस्तकों के आधार पर नवग्रहों की शांति करने वाले नौ तीर्थंकरों के नाम प्राप्त होते हैं। इन नवतीर्थंकरों के क्रम से भी एक स्तोत्र की मैंने रचना की है जो कि पृष्ठ नं. 63-64 पर प्रकाशित है तथा इन नवग्रहों से संबंधित नवतीर्थंकर भगवन्तों की जाप्य इस प्रकार है–

1. ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं सोमग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीवासुपूज्य-जिनेंद्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।

6. ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीपुष्पदंतनाथजिनेंद्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय नमः।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में अत्यन्त सुन्दर ''नवग्रहशांति जिनमंदिर'' का निर्माण हुआ है, जिसमें 9 कमलों पर नवग्रहों को शांत करने वाले 9 तीर्थंकर भगवन्तों की मूलवर्ण वाली प्रतिमाएँ विराजमान की गई हैं। 23 फरवरी 2004 को वेदी प्रतिष्ठा एवं कलशारोहण के पश्चात् से ही अनेकानेक श्रद्धालु अपने ग्रहों की शांति हेतु पूजा-अर्चना करने यहाँ पधार रहे हैं। भारतवर्ष में दिगम्बर जैन आगम परम्परा का वह मंदिर अपने आप में अनोखा है, जिसकी कीर्ति सभी ओर व्याप्त हो रही है। आप भी उस सुंदर मंदिर के दर्शन करके अपने सौभाग्य की सराहना करें।

इस विधान में प्रथम नवग्रह समुच्चय पूजन में भी नव तीर्थंकरों की अर्चना है तथा पृथक्-पृथक् ग्रहों की शांति हेतु पृथक्-पृथक् एक-एक तीर्थंकर की ही पूजा है, जिनका क्रम निम्न प्रकार है–

1. रविग्रह की शांति हेतु पद्मप्रभ जिनेन्द्र 2. चन्द्रग्रह में चन्द्रप्रभ 3. मंगल ग्रह में वासुपूज्य 4. बुधग्रह में मल्लिनाथ 5. गुरुग्रह में महावीर भगवान 6. शुक्रग्रह में पुष्पदंत 7. शनिग्रह में मुनिसुव्रत 8. राहुग्रह में नेमिनाथ और 9 केतुग्रह में पार्श्वनाथ भगवान की पूजा है। इस प्रकार इस पूजन विधान में कुल 10 पूजन हैं, 9 पूर्णार्घ्य हैं, 10 जयमाला महार्घ्य एवं एक अंतिम समुच्चय जयमाला का महार्घ्य है अतः कुल 20 अर्घ्य मण्डल पर चढ़ाने का निर्देश है। एक दिन में मात्र 2-3 घंटे के अंदर यह विधान सम्पन्न करके भक्तजन अपने ग्रहों की शांति कर सकते हैं। इस पूजन विधान के द्वारा आप सभी व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक लक्ष्य की प्राप्ति करें, यही मंगल भावना है।

परमपूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का संक्षिप्त जीवन परिचय

-ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

जिस प्रकार से प्राची दिशा का सूर्य किसी के कहने से नहीं प्रत्युत् अपनी किरण प्रभा से जग को आलोकित कर देता है, जिस प्रकार बिना माँगे मेघ अपनी जलवृष्टि से सभी को संतृप्त कर देते हैं, जिस प्रकार मोर किसी के कहने से नहीं अपितु बादलों को देख अपने पंख फैलाकर नाचने लगते हैं उसी प्रकार सन्त-महापुरुषों को अपना परिचय स्वयं देने की आवश्यकता नहीं होती प्रत्युत् वह अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से ही स्वयं का परिचय प्रदान कर जन-जन का उपकार करते रहते हैं। सन्तों की उसी श्रृंखला में आने वाला देदीप्यमान मणि के समान आलोकित नाम जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की सुशिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का है जो कि किसी परिचय का मोहताज नहीं, फिर भी मैं अल्पबुद्धि मात्र भक्तिवश ही यहाँ उनका संक्षिप्त परिचय देने का साहस कर रही हूँ-

भारतवर्ष का उत्तरप्रदेश प्रांत अनेक तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमि के रूप में जगख्यात है। उसी उ.प्र. के अवध प्रांत स्थित बाराबंकी जिले में टिकैतनगर नाम का ग्राम है जहाँ की माटी ने इससे पूर्व भी पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी, अभयमती माताजी आदि अनमोल रत्नों को जन्म दिया है। उसी सुरभित माटी में माता-पिता श्रीमती मोहिनी देवी एवं लाला छोटेलाल जी की बगिया में बारहवीं सन्तान के रूप में सन् 1958 ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या की पवित्र तिथि में ''कु. माधुरी'' के नाम से एक कली पुष्पित-पल्लवित हुईं। माता-पिता एवं कुटुम्बीजनों को अपनी मधुरता एवं बालसुलभ चेष्टाओं से प्रसन्नमना करती कु. माधुरी जब तेरह वर्ष की उम्र में पहुँचीं उस समय इन्हें संयोगवश ज्येष्ठ भगिनी अर्थात् जगन्माता गणिनी ज्ञानमती माताजी के दर्शनार्थ अपनी माता के साथ अजमेर (राज.) जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और वहां अपनी तीक्ष्ण बुद्धि के द्वारा आपने संघ के प्रत्येक साधु को प्रभावित कर दिया, बस उसी समय गणिनी माताजी ने आपकी बुद्धि प्रखरता को जानकर संसार की असारता का बोध करा दिया और आपने उस 13 वर्ष की लघुवय में सुगन्धदशमी की पवित्र तिथि में आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कर लिया और फिर त्यागमार्ग पर कदम रखने वाली उस सुकुमार बालिका ने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। सन् 1972 में आपने सोलापुर से शास्त्री एवं 1973 में विद्या वाचस्पति की उपाधि प्राप्त की। सन् 1981 में दो प्रतिमा

एवं 1987 में पूज्य माताजी से ही सप्तम प्रतिमा ग्रहण की, साथ ही आपने दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के मंत्री पद का कार्यभार संभाला। भारत के अनेक शहरों में आपके द्वारा मिष्ट एवं मधुर वाणी में कराये गये विधानों की आज भी गूँज है, इस बीच आपने अनेक लेखन कार्य भी किये। आपके द्वारा बनाये गये भजनों, पूजन, चालीसा, स्तोत्र आदि में संक्षिप्त रूप में आगम का सार समाहित है। दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित ''सम्यग्ज्ञान'' मासिक पत्रिका का कार्यभार आज भी आपके कन्धों पर है। जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति भारत भ्रमण, ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार एवं ''भगवान महावीर ज्योति'' के भारत भ्रमण में किये गये आपके योगदान का वर्णन शब्दों में अवर्णनीय है।

अपने ज्ञान की वृद्धि करते हुए निरन्तर चारित्र के चरमोत्कर्ष की भावना भाते हुए आपने 13 अगस्त 1989 श्रावण शुक्ला ग्यारस की पवित्र तिथि में हस्तिनापुर जैसे ऐतिहासिक व पवित्र तीर्थ स्थान में निर्मित विश्व की अद्वितीय रचना जम्बूद्वीप स्थल पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी से नारी जीवन के चरमलक्ष्म आर्यिका दीक्षा की प्राप्ति कर ''चन्दनामती'' नाम प्राप्त किया और सम्पूर्ण जगत को अपनी चन्दनरूपी सुरभि से निरन्तर आप्लावित कर अनेक भव्यों को मोक्षमार्ग में लगा रही हैं। दीक्षा के पश्चात् अब तक आपने लगभग 15000 कि.मी. की पदयात्रा अपने इस कमजोर शरीर से की है जिसमें आपके द्वारा महती धर्मप्रभावना हुई है। आपकी इस विद्वत्ता, ओजस्विता, वाणी में सारगर्भिता व मार्मिकता को देख पूज्य गणिनी श्री ने अक्टूबर सन् 1997 में 24 कल्पद्रुम विधान की पूर्णता पर आपको ''प्रज्ञाश्रमणी'' की उपाधि से अलंकृत किया। लेखन श्रृंखला में अनेकों पुस्तकों का लेखन आपके द्वारा हुआ है जिसमें संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी आदि भाषाओं में रचनाएं हैं। ज्ञानज्योति की भारत यात्रा, 'समयसार' व 'कुंदकुंदमणिमाला' आदि ग्रंथों का पद्यानुवाद, सचित्र ज्ञानाञ्जलि रचना, अवध की अनमोल मणि, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर, भक्तामर विधान, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रह विधान, भगवान ऋषभदेव दशावतार आदि अनेक नाटक आदि के साथ-साथ वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री द्वारा लिखित 'षट्खंडागम ग्रंथ की सिद्धान्तचिंतामणि टीका' एवं 'ऋषभदेव चरितम्' का आप हिंदी अनुवाद कर रही हैं।

ऐसी माता के बारे में कुछ भी कहना नन्हें बालक द्वारा समुद्र की माप करने जैसा होगा अतः इतना ही कहते हुए अपनी लेखनी को विराम देती हूँ कि हे माँ! जब तक इस धरा पर जन्मूं गुरुरूप में तू मुझे भवसागर से पार लगाने में सहायक बने और तेरी चरणधूलि को पाकर मैं भी आत्मउत्थान कर सकूँ।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 में हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे।हैं

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है–कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित भगवान ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं शारीरिक सुख की प्राप्ति करें।

मण्डल का नक्शा

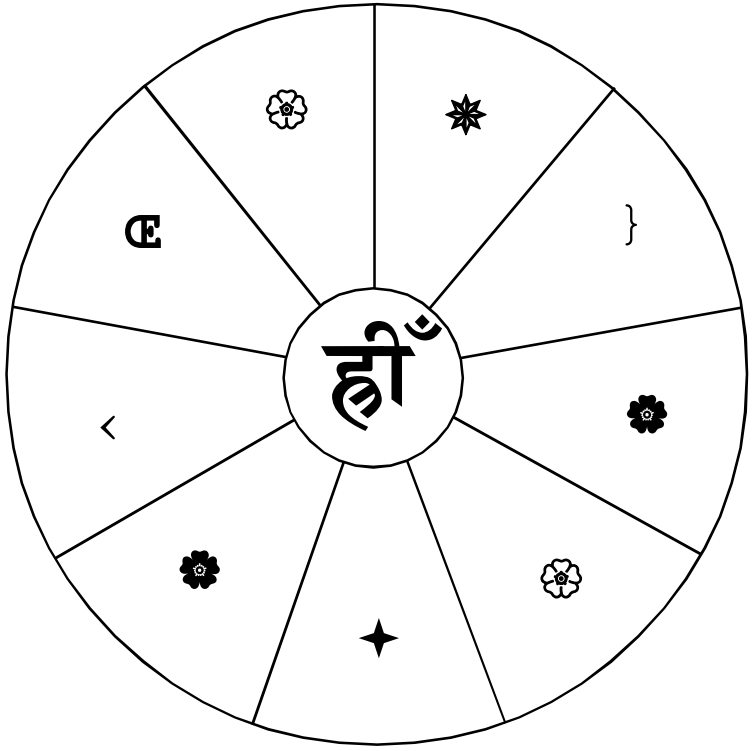

पूजा नं. १

नवग्रह पूजा

समुच्चय पूजा

(स्थापना)

–कुसुमलता छंद–

काल अनादी से कर्मों के, ग्रह ने मुझे सताया है।
उनका निग्रह करने का अब, भाव हृदय में आया है।।
इसीलिए ग्रह शान्ती हेतू, पूजा पाठ रचाया है।
तीर्थंकर प्रभु के अर्चन को, मैंने थाल सजाया है।।१।।

–दोहा–

आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण महान।
अष्टद्रव्य से पूर्व है, यह विधि हुई प्रधान।।२।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकाः श्रीनवतीर्थंकर जिनाः ! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकाः श्रीनवतीर्थंकर जिनाः ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकाः श्रीनवतीर्थंकर जिनाः ! अत्र मम सन्निहिताः भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अष्टक–शंभु छंद

मुनिमनसम निर्मल जल लेकर, प्रभु पद में धारा करना है।
जर जन्म मरण को निर्बल कर, अब आत्मचिन्तवन करना है।।
नव तीर्थंकर की पूजन कर, नवग्रह का निग्रह करना है।
व्यवहार सिद्धि के साथ-साथ, परमार्थ सिद्धि भी वरना है।।१।।
ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्रीनवतीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रकर केशर की, सुरभी को और बढ़ाना है।
श्रद्धा से उसको जिनवर के, चरणों में आज चढ़ाना है।।
नव तीर्थंकर की पूजन कर, नवग्रह का निग्रह करना है।
व्यवहार सिद्धि के साथ-साथ, परमार्थ सिद्धि भी वरना है।।२।।
ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्री नवतीर्थंकरेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम श्वेत तंदुलों को, गजमोती समझ चढ़ाना है।
अपने आतम के छिपे गुणों के, मोती अब प्रगटाना है।।
नवतीर्थंकर की पूजन कर, नवग्रह का निग्रह करना है।
व्यवहार सिद्धि के साथ-साथ, परमार्थ सिद्धि भी वरना है।।३।।
ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकश्रीनवतीर्थंकरेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरकल्पवृक्ष के पुष्प समझ, यह पुष्प अंजली भरना है।
जिनवर के सम्मुख श्रद्धा से, अब इन्हें समर्पित करना है।।
नवतीर्थंकर की पूजन कर, नवग्रह का निग्रह करना है।
व्यवहारसिद्धि के साथ-साथ, परमार्थसिद्धि भी वरना है।।४।।
ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकश्रीनवतीर्थंकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृतमय इन पकवानों में, दिव्यामृत अनुभव करना है।
जिनवर चरणों में भेंट चढ़ा, क्षुधरोग निवारण करना है।।
नवतीर्थंकर की पूजन कर, नवग्रह का निग्रह करना है।
व्यवहारसिद्धि के साथ-साथ, परमार्थसिद्धि भी वरना है।।५।।
ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकश्रीनवतीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के लघु दीपक में रत्नों का, दीप प्रकल्पित करना है।
प्रभु की आरति करके अन्तर का, दीप प्रज्वलित करना है।।
नवतीर्थंकर की पूजन कर, नवग्रह का निग्रह करना है।
व्यवहारसिद्धि के साथ-साथ, परमार्थसिद्धि भी वरना है।।६।।
ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकश्रीनवतीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन अगरू की धूप में मलयागिरि का अनुभव करना है।
प्रभु सम्मुख अग्नी में खेकर, अब नष्ट कर्म सब करना है।।
नवतीर्थंकर की पूजन कर, नवग्रह का निग्रह करना है।
व्यवहारसिद्धि के साथ-साथ, परमार्थसिद्धि भी वरना है।।७।।
ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकश्रीनवतीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर सेव बादाम आदि फल से प्रभु अर्चन करना है।
इनमें ही कल्पतरू के सच्चे, फल का अनुभव करना है।।
नवतीर्थंकर की पूजन कर, नवग्रह का निग्रह करना है।
व्यवहारसिद्धि के साथ-साथ, परमार्थसिद्धि भी वरना है।।८।।
ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकश्रीनवतीर्थंकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले अष्ट द्रव्य का थाल प्रभू को, अर्घ्य समर्पित करना है।
''चन्दनामती'' नवग्रह शांती के, लिए अर्चना करना है।।
नवतीर्थंकर की पूजन कर, नवग्रह का निग्रह करना है।
व्यवहारसिद्धि के साथ-साथ, परमार्थसिद्धि भी वरना है।।९।।
ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकश्रीनवतीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

नवग्रहों की तपन से, है संतप्त शरीर।
शांतीधारा करन से, बनूँ शीघ्र अशरीर।।

शांतये शांतिधारा।

आत्मसुरभि के हेतु ले, पुष्पांजलि का थाल।
पुष्प बिखेरूं प्रभु निकट, ग्रह हों मेरे शांत।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

तर्ज-बाबुल की दुआएँ.....

हे नाथ! आपके चरणों में, जयमाल गूँथकर लाए हम।
ग्रह शांति हेतु पदकमलों में, इक थाल अर्घ्य का लाए हम।।टेक.।।

कभी तन में व्याधि हुई मेरे, सिर आँख कान में दर्द हुआ।
कभी उदर में शूल उठी मेरे, कभी हाथ पैर में दर्द हुआ।।
उस बेचैनी में भी प्रभुवर, तुमको नहिं कभी भुलाएँ हम।
ग्रह शांति हेतु पदकमलों में, इक थाल अर्घ्य का लाए हम।।१।।

व्यापार में हानी हुई कभी, कभि चोरों ने धन लूट लिया।
कभी छापा पड़ने के कारण, मन में संताप व शोक हुआ।।
इन हानि-लाभ के क्षण में भी, जिनधर्म में ध्यान लगाएँ हम।
ग्रह शांति हेतु पदकमलों में, इक थाल अर्घ्य का लाएँ हम।।२।।

कुल पाँच करोड़ व अड़सठ लाख, निन्यानवे सहसरु पाँच शतक।
इक्यासी रोगों की संख्या, हो सकती तन में सर्वाधिक।।
नरकों में प्रगट होते ये सब, उस नर्क में कभी न जाएँ हम।
ग्रह शांति हेतु पदकमलों में, इक थाल अर्घ्य का लाए हम।।३।।

नभ में रहने वाले नवग्रह, मानव के संग जब लग जाते।
तब कर्म असाता के कारण, वे मानव नाना दुःख पाते।।
तुम पूजन फल से उन सबको, शुभरूप सहज कर पाएँ हम।
ग्रहशांति हेतु पदकमलों में, इक थाल अर्घ्य का लाए हम।।४।।

रवि, शशि, मंगल, बुध, गुरु एवं, वे शुक्र, शनी कहलाते हैं।
राहू, केतू मिल नवग्रह ये, ज्योतिष का चक्र चलाते हैं।।
इनमें से अशुभ ग्रहों से प्रभु!, नहिं कभी सताए जाएँ हम।
ग्रहशांति हेतु पदकमलों में, इक थाल अर्घ्य का लाए हम।।५।।

''चन्दनामती'' बस इसीलिए, यह पूजा पाठ रचाया है।
पूजा के माध्यम से प्रभुवर, भावों को शुद्ध बनाया है।।
हो चरम लक्ष्य की सिद्धि नाथ! पूजन फल ऐसा पाएँ हम।
ग्रहशांति हेतु पदकमलों में, इक थाल अर्घ्य का लाएँ हम।।६।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकश्रीनवतीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

—दोहा—

नवग्रह पूजन से सभी, ग्रह हो जाते शांत।
करो अर्चना से सभी, भव की व्यथा समाप्त।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः ।

पूजा नं. २

सूर्यग्रह अरिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभ पूजा

—स्थापना—

*दोहा —***ग्रह अरिष्ट यदि सूर्य हो, पूजो पद्मजिनेन्द्र।**
कर्म असाता दूर हों, पा जाऊँ सुखसिन्धु।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारकश्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारकश्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारकश्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

(अष्टक) नंदीश्वर पूजन की चाल

गंगा का निर्मल नीर, झारी भर लाऊँ।
धारा दे भवदधि तीर, मैं अब हो जाऊँ।।
हे पद्मनाथ भगवान्, मुझमें शक्ति भरो।
ग्रह सूर्य ताप हो शान्त, ऐसी युक्ति करो।।१।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारकश्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन की गन्ध अपार, प्रभु पद में चर्चूं।
प्रगटें गुण हृदय हजार, ऐसी भक्ति रचूँ।।
हे पद्मनाथ भगवान्, मुझमें शक्ति भरो।
ग्रह सूर्य ताप हो शान्त, ऐसी युक्ति करो।।२।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम तन्दुल श्वेत, लेकर पुञ्ज धरूँ।
अक्षयपद प्राप्ती हेत, प्रभु पद पुँज करूँ।।
हे पद्मनाथ भगवान्, मुझमें शक्ति भरो।
ग्रह सूर्य ताप हो शान्त, ऐसी युक्ति करो।।३।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपक वर हरसिंगार, फूल मंगाया है।
अंजलि भर प्रभु ढिग आज, स्वयं चढ़ाया है।।
हे पद्मनाथ भगवान्, मुझमें शक्ति भरो।
ग्रह सूर्य ताप हो शान्त, ऐसी युक्ति करो।।४।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूड़ी पेड़ा पकवान, अर्पण कर पूजूँ।
हो क्षुधारोग की हान, तुम सम पद ले लूँ।।
हे पद्मनाथ भगवान्, मुझमें शक्ति भरो।
ग्रह सूर्य ताप हो शान्त, ऐसी युक्ति करो।।५।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक ज्योति जलाय, ज्ञानप्रकाश करूँ।
अज्ञान तिमिर नश जाय, आतम स्वस्थ करूँ।।
हे पद्मनाथ भगवान्, मुझमें शक्ति भरो।
ग्रह सूर्य ताप हो शान्त, ऐसी युक्ति करो।।६।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि धूप जलाय, गंध सुगंध करूँ।
सब कर्म नष्ट हो जाय, आतम स्वस्थ करूँ।।
हे पद्मनाथ भगवान्, मुझमें शक्ति भरो।
ग्रह सूर्य ताप हो शान्त, ऐसी युक्ति करो।।७।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारकश्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सेव अनार खजूर, फल का थाल भरूँ।
मुझ आत्म लक्ष्य हो पूर्ण, चरणों भाल धरूँ।।
हे पद्मनाथ भगवान्, मुझमें शक्ति भरो।
ग्रह सूर्य ताप हो शान्त, ऐसी युक्ति करो।।८।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारकश्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सलिलादिक द्रव्य मिलाय, अर्घ्य बनाय लिया।
''चन्दना''बसूं शिव जाय, अतः चढ़ाय दिया।।
हे पद्मनाथ भगवान्, मुझमें शक्ति भरो।
ग्रह सूर्य ताप हो शान्त, ऐसी युक्ति करो।।९।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारकश्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

रविग्रह शांती हेतु मैं, धारा दूँ त्रयबार।
पद्मप्रभ के चरण में, मिलती शांति अपार।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब ले, पुष्पांजलि विकिरन्त।
पद्मप्रभ के निकट में, दुःखों का हो अन्त।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

(अब निम्न पद्य पढ़कर मंडल पर श्रीफल सहित अर्घ्य चढ़ावें।)

तर्ज-चन्दा प्रभु के दर्शन करने.....

पद्मप्रभ तीर्थंकर की, पूजा सब पाप नशाएगी।
रविग्रह से होने वाली ग्रह-बाधा तुरन्त भग जाएगी।।
जल चन्दन अक्षत पुष्प और, नैवेद्य दीप वर धूप लिया।
फल आदि आठ द्रव्यों से युत, ''चन्दना'' अर्घ्य का थाल लिया।।
प्रभु चरणों में अर्पण करते ही, आश मेरी फल जाएगी।
रविग्रह से होने वाली ग्रह-बाधा तुरन्त भग जाएगी।।११।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मण्डलस्योपरि प्रथम कोष्ठकमध्ये महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारकश्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

—शेर छंद—

श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्र सूर्य ताप को हरें।
श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्र सर्वशांति को करें।।
श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्र रोग शोक परिहरें।
श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्र तन में स्वस्थता भरें।।१।।

माता के गर्भ में तुम्हारे आने से पहले।
की रत्नवृष्टि धनद ने तुम मात के महले।।
तब से धरा वसुन्धरा बन धन्य हुई है।
माता पिता के संग प्रजा धन्य हुई है।।२।।

थी लाल कमल के समान काया आपकी।
सुकुमारता सौन्दर्य में तुलना न आपकी।।

देवेन्द्र सदा सेवा में प्रस्तुत रहा करता।
किंकर समान भक्ति के ही शब्द उचरता।।३।।

जैसे कमल खिलाने में सूरज निमित्त है।
प्रभु मनकमल खिलाने में रवि के ही सदृश हैं।।
मैंने सुना है आपने कितनों को है तारा।
कितने ही भक्तों का प्रभो! संकट है निवारा।।४।।

बस आज मैंने इसलिए तुम शरण लही है।
मुझ मन में तेरी भक्ति की गंगा जो बही है।।
तुम सम मुझे भी स्वस्थ तन की प्राप्ति हो जावे।
मुझ ''चन्दनामती'' की व्याधि शांत हो जावे।।५।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

पद्मप्रभ की अर्चना, हरती मन सन्ताप।
चरणकमल की वन्दना, हरे ''चन्दना'' पाप।।१।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

पूजा नं. ३

चन्द्रग्रह अरिष्ट निवारक

श्री चन्द्रप्रभ पूजा

स्थापना

—गीताछंद—

चन्दाकिरण समश्वेत चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र समर्चना।
शशिग्रह अरिष्ट विनाश हेतू, मैं करूँ अभ्यर्थना।।
आओ विराजो नाथ मन-मन्दिर मेरा यह रिक्त है।
बस भावना है प्रमुख मेरी, द्रव्य तो अतिरिक्त है।।१।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्टनिवारकश्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्टनिवारकश्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्टनिवारकश्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

—अष्टक—

तर्ज–नदिया किनारे मेरो धाम.....।

चन्दाप्रभू भगवान, अरज मेरी सुन लीजे।
शशिग्रह बाधा हान, करो जी प्रभु सुख दीजे।।

गंगा का शीतल जल लेके प्रभुवर, चरणों में जल धारा डालूँ जिनवर।
पा जाऊँ लक्ष्य महान, अरज मेरी सुन लीजे।।१।।शशिग्रह.....

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर घिस करके भगवन्, चरणों में तेरे करना है चर्चन।
हो भवआतप हान, अरज मेरी सुन लीजे।।शशि.....।।२।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल धवल वासमति के लाऊँ, चरणों में अक्षत पुञ्ज चढ़ाऊँ।
अक्षयपना होवे प्राप्त, अरज मेरी सुन लीजे।।शशि.....।।१३।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला कमल आदि सुमनों को लाऊँ, निज मन सुमन युत पद मेंचढ़ाऊँ।
कामव्यथा होवे हान, अरज मेरी सुन लीजे।।शशिग्रह.....।।४।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान का थाल लाऊँ भराके, जिनवर सम्मुख चढ़ाऊँ आके।
क्षुधरोग हो मेरा हान, अरज मेरी सुन लीजे।। शशिग्रह.....।।५।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक की आरति सजाकर, आरति उतारूँ प्रभु सम्मुख आकर।
मोहतिमिर हो हान, अरज मेरी सुन लीजे।।शशिग्रह.....।।६।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टगन्ध की धूप जलाऊँ, उसके निमित्त कर्मों को जलाऊँ।
पा जाऊँ निष्कर्म धाम, अरज मेरी सुन लीजे।।शशिग्रह.....।।७।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता व किसमिस बादाम लाकर, जिनवर निकट थाल फल का चढ़ाकर।
फल चाहूँ शिवधाम, अरज मेरी सुन लीजे।। शशिग्रह.....।।८।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टद्रव्य का थाल सजाकर, चन्दाप्रभू के सम्मुख चढ़ाकर।
हो ''चन्दना'' सारे काम, अरज मेरी सुन लीजे।।शशिग्रह.....।।९।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनशांति हेतू है शांतिधारा, प्रभु के चरण में त्रय बार डाला।
निज में हो मम विश्राम, अरज मेरी सुन लीजे।। शशिग्रह...।।

शांतये शांतिधारा।

नीले कमल लाल कमलों को लाऊँ, हाथों की अंजलि भरकरचढ़ाऊँ।
मृदु हों मेरे परिणाम, अरज मेरी सुन लीजे।। शशिग्रह.....।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

(अब मण्डल के ऊपर चन्द्रग्रह के स्थान पर श्रीफल सहित अर्घ्य चढ़ावें।)

–शंभुछंद–

हे प्रभु! कुछ कर्म असातावश, ग्रह चन्द्र मुझे दुख देता है।
तन में व्याधी को पैदाकर, मुझको अशान्त कर देता है।।
इसलिए तुम्हारी भक्ती में, आठों ही द्रव्य समर्पित हैं।
''चन्दना'' चन्द्रग्रह शांति हेतु, भावों का अर्घ्य समर्पित है।।१।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

–रोला छंद–

अहो चन्द्रप्रभु देव! तुम हो जग के चन्दा।
महासेन पितु और लक्ष्मणा माँ के नन्दा।।

काशी के ही पास, चन्द्रपुरी नगरी है।
जहाँ जन्म से धन्य, हुई प्रजा सगरी है।।१।।

पहले ब्याह रचाय, फिर संन्यास लिया था।
केवलज्ञान उपाय, जग कल्याण किया था।।
सम्मेदाचल जाय, ऐसा ध्यान किया था।
आठों कर्म नशाय, पद निर्वाण लिया था।।२।।

पहले निजग्रह नाश, कर फिर परग्रह नाशा।
पूर्ण हुई निज आश, पर की भी अभिलाषा।।
यह महिमा सुन आज, भक्त तिहारे आए।
सुनो मेरे महाराज, तुम से प्रभु हम पाए।।३।।

कर्म अनादीकाल, से मेरे संग लागे।
इसीलिए ग्रहचन्द्र, मुझको आय सताते।।
तुम शशिग्रह के नाथ! मेरा कष्ट हरो जी।
मेरा सब दुखदर्द, प्रभु अब दूर करो जी।।४।।

इसीलिए यह अर्घ्य, करूँ समर्पण प्रभु जी।
मेरा सब कुछ आज, तुझको अर्पण प्रभु जी।।
ग्रह शान्ती के साथ, आतमशक्ति दिला दो।
झुका 'चन्दना' माथ, परमातम प्रगटा दो।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा–

श्रीचन्द्रप्रभनाथ की, करो भक्ति तिहुँकाल।
चन्द्र सदृश शीतल बना, ग्रह हरते तत्काल।।

इत्याशीर्वादः। दिव्य पुष्पांजलिः।

पूजा नं. ४

मंगलग्रह अरिष्ट निवारक
श्री वासुपूज्य पूजा

स्थापना

–दोहा–

वासुपूज्य जिनराज की, करूँ थापना आज।
मंडल पर तिष्ठो प्रभो, पूरो मेरे काज।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारकश्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारकश्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारकश्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अष्टक–शंभुछंद

जल का स्वभाव है शीतलता, यह जगप्रसिद्ध अनुभव माना।
उस शीतलता की प्राप्ति हेतु, जल से धारा करने आना।।
श्रीवासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगलग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।१।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन इक है ऐसा पदार्थ, जिसमें भुजंग विष व्याप्त न हो।
उस चन्दन को ही लाया मैं, जिससे आत्मिक संताप न हो।।
श्रीवासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगल ग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।२।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद प्राप्ती के प्रतीक में, अक्षत प्रस्तुत द्रव्य मेरा।
हे प्रभु! मुझको वह पद दे दो, जिससे हो प्रकट स्वभाव मेरा।।
श्री वासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगलग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।३।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जो फूल सदा विकसित होकर, उपवन को करें सुशोभित हैं।
वे प्रभुचरणों में चढ़कर और, अधिक हो गये सुगंधित हैं।।
श्रीवासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगलग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।४।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सरस मधुर पकवानों से, हम तन की क्षुधा मिटाते हैं।
उनको प्रभु निकट चढ़ाने से, तन रोग स्वयं नश जाते हैं।।
श्री वासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगलग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।५।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत के दीप धरातल का, अंधियारा दूर किया करते।
घृतदीपक से प्रभु आरति कर, हम मन का तिमिर दूर कर लें।।
श्रीवासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगलग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।६।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहान्धकार–विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ले छैलछबीला अगर तगर, चंदन में कूट मिलाया है।
कर्मों के दहन हेतु मैंने, अग्नी में उसे जलाया है।।
श्री वासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगलग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।७।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम छुहारा लौंग आदि, उत्तम फल थाली में भरके।
जिनवर के सम्मुख भेंट करूँ, मनवाञ्छित सौख्य तभी मिलते।।
श्री वासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगलग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।८।।

ॐ ह्री मंगलग्रहारिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल से फल तक ले अष्टद्रव्य, प्रभु वासुपूज्य अर्चना करूँ।
''चन्दना'' अनघ फल प्राप्ति हेतु, जिनवर पद शत वन्दना करूँ।।
श्री वासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगलग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।९।।

ॐ ह्री मंगलग्रहारिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरणों में धारा करने से, शाश्वत शांती मिल सकती है।
सांसारिक क्षणिक सुखों में नहिं, वैसी शांती मिल सकती है।।
श्री वासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगलग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।१०।।

शान्तये शांतिधारा।

जीवन बगिया में प्रभु भक्ती से, ही बहार आ सकती है।
पुष्पांजलि के द्वारा आत्मा में, सुरभि स्वयं आ सकती है।।
श्रीवासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगलग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(अब मण्डल के ऊपर मंगलग्रह के स्थान पर श्रीफल सहित अर्घ्य चढ़ावें।)

तर्ज-आओ बच्चों.....

आवो हम सब करें अर्चना, वासुपूज्य भगवान की।।
मंगलग्रह की बाधानाशक, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-४।।टेक.।।
काल अनादी से कर्मों का, ग्रह आत्मा के संग लगा।
आत्मनिधी को भी न ''चन्दना'', स्वयं जीव कर प्राप्त सका।।
इसीलिए अब पूजन कर लूँ, मिले राह निर्वाण की।
मंगलग्रह की बाधा नाशक, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्, वन्दे जिनवरम् ।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारकश्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

—शंभुछंद—

हे वासुपूज्य देव! करूँ अर्चना तेरी।
हे वासुपूज्य देव! करूँ वन्दना तेरी।।
हे नाथ! पूर्ण कर दो, एक प्रार्थना मेरी।
मेरे अरिष्ट नष्ट हों, हो कामना पूरी।।१।।
कुछ पुण्य के संयोग से, मानव जनम मिला।
लेकिन अशुभ के योग से, कुल जैन ना मिला।।
हे नाथ! पूर्ण कर दो, एक प्रार्थना मेरी।
मेरे अरिष्ट नष्ट हों, हो कामना पूरी।।२।।
जैनत्व भी मिला तो न, उपयोग कर सका।
जिनवाणी को सुना न उसे, मन में धर सका।।
हे नाथ! पूर्ण कर दो, एक प्रार्थना मेरी।
मेरे अरिष्ट नष्ट हों, हो कामना पूरी।।३।।

जब ज्ञान हुआ आपका, दरबार है सच्चा।
तब भक्तिभाव से शरण, लही करो रक्षा।।
हे नाथ! पूर्ण कर दो, एक प्रार्थना मेरी।
मेरे अरिष्ट नष्ट हों, हो कामना पूरी।।४।।
चम्पापुरी के राजा, श्रीवसुपूज्य धन्य थे।
माता जयावती के घर, में बरसे रत्न थे।।
हे नाथ! पूर्ण कर दो, एक प्रार्थना मेरी।
मेरे अरिष्ट नष्ट हों, हो कामना पूरी।।५।।
कल्याण करके अपना पुनः, जग को संवारा।
श्रीवासुपूज्य ने दिया, भव्यों को सहारा।।
हे नाथ! पूर्ण कर दो, एक प्रार्थना मेरी।
मेरे अरिष्ट नष्ट हों, हो कामना पूरी।।६।।
अब आपकी छाया से मुझे, शांति मिली है।
मेरे हृदय में ''चन्दना'' इक, ज्योति जली है।।
हे नाथ! पूर्ण कर दो, एक प्रार्थना मेरी।
मेरे अरिष्ट नष्ट हों, हो कामना पूरी।।७।।
इस अर्घ्य थाल को करूँ, अर्पित मैं चरण में।
रक्षा करो अब ले लो, अपनी ही शरण में।।
हे नाथ! पूर्ण कर दो, एक प्रार्थना मेरी।
मेरे अरिष्ट नष्ट हों, हो कामना पूरी।।८।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारकश्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा–

वासुपूज्य वसुपूज्य सुत, वन्दन करूँ त्रिकाल।
तभी पूज्य बन आत्मा, होगी मालामाल।।

इत्याशीर्वादः

पूजा नं. ५

बुधग्रह अरिष्ट निवारक
श्री मल्लिनाथ पूजा

–स्थापना–

तर्ज–मेरे मन मन्दिर में आन.....

मेरे हृदय महल में आन, पधारो मल्लिनाथ भगवान।।
आओ तिष्ठो नाथ! विराजो
मण्डल ऊपर प्रभु तुम राजो।।
बुधग्रह की बाधा हो हान, पधारो मल्लिनाथ भगवान।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारकश्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारकश्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अष्टक–दोहा

यमुना सरिता नीर ले, करूँ चरण जलधार।
मल्लिनाथ प्रभु बालयति, हैं सुख के आधार।।१।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरा–मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन घिस कर्पूर युत, चरणन चर्चूं नाथ।
मल्लिनाथ प्रभु बालयति, हैं सुख के आधार।।२।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता सम तन्दुल धवल, अर्पूं प्रभु तुम पास।
मल्लिनाथ प्रभु बालयति, हैं सुख के आधार।।३।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

विविध भाँति के पुष्प ले, चरण चढ़ाऊँ नाथ।
मल्लिनाथ प्रभु बालयति, हैं सुख के आधार।।४।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

थाल भरा नैवेद्य का, अर्पित है प्रभु पास।
मल्लिनाथ प्रभु बालयति, हैं सुख के आधार।।५।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक की आरती, आरत हरे अपार।
मल्लिनाथ प्रभु बालयति, हैं सुख के आधार।।६।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगंधित दहन से, नशें कर्म दुखकार।
मल्लिनाथ प्रभु बालयति, हैं सुख के आधार।।७।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव आम्र अंगूर से, मिले सुफल साकार।
मल्लिनाथ प्रभु बालयति, हैं सुख के आधार।।८।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य ले ''चन्दना'', अर्घ्य चढ़ाऊँ आज।
मल्लिनाथ प्रभु बालयति, हैं सुख के आधार।।९।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

रत्नत्रय की प्राप्ति में, त्रयधारा आधार।
स्वर्णभृंग की नाल से, कर लो शांतीधार।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पों की भर अंजली, अर्पूं प्रभु के पास।
महक उठे उस गंध से, मन का मंदिर आज।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(अब मण्डल के ऊपर बुधग्रह के स्थान पर श्रीफल सहित अर्घ्य चढ़ावें)

तर्ज-ऐ माँ तेरी सूरत से अलग.....

हे मल्लिनाथ! तुम चरणों में, ग्रहशांति हेतु हम आए हैं।
भगवान्.....भगवान् तुम्हारे सम्मुख हम, यह अर्घ्य चढ़ाने आए हैं॥टेक.।।
यह बात सुनी हमने, तुम बुधग्रह स्वामी हो।
तुम उसके निग्रह में, सक्षम प्रभु ज्ञानी हो।।
''चन्दना'' तुम्हारी पूजन से, सब संकट हरने आए हैं।
भगवान्.....भगवान् तुम्हारे सम्मुख हम, यह अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।१।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

तर्ज–जैनधर्म के हीरे मोती.....

हे प्रभु! पूजा के माध्यम से, एक सुखद संवेदन है।
संसारी औ सिद्धों का प्रभु, आज यहाँ सम्मेलन है।।टेक.।।

नाथ! तुम्हारी और मेरी, आत्मा में अन्तर बहुत बड़ा।
तुम हो सिद्धशिला के वासी, मैं भवसागर बीच खड़ा।।
निश्चय नय से दोनों की आत्मा में इक सम वेदन है।
संसारी औ सिद्धों का प्रभु, आज यहाँ सम्मेलन है।।१।।
तुम सम बनने हेतु मुझे, पुरुषार्थ बहुत करना होगा।
बाह्य और आभ्यंतर तप की, अग्नी में तपना होगा।
तभी खान सम सोना यह बन, जाएगा कुन्दन सम है।
संसारी औ सिद्धों का प्रभु, आज यहाँ सम्मेलन है।।२।।
निज को पूज्य बनाने में प्रभु, की पूजा इक साधन है।
जिनवर के गुणगान से समझो, होता निज आराधन है।।
कर्मों की शृँखला का होता, इन सबसे ही छेदन है।
संसारी औ सिद्धों का प्रभु, आज यहाँ सम्मेलन है।।३।।
ग्रह का चक्र मेरी आत्मा के, संग अनादीकाल से है।
उनमें से इक बुध ग्रह है, जिससे अशांत मुझ तन मन है।।
उसी की शांती हेतु ''चन्दना'' रची नवग्रह पूजन है।
संसारी औ सिद्धों का प्रभु, आज यहाँ सम्मेलन है।।४।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा–

कर्ममल्ल को नष्ट कर, बने मल्लि भगवान् ।
तीर्थंकर पद प्राप्त कर, पाया पद निर्वाण।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

पृ पृ पृ पृ पृ

पूजा नं. ६

गुरुग्रहारिष्ट निवारक
श्री महावीर जिनेन्द्र पूजा

–स्थापना–

तर्ज–आने से जिसके आए बहार.....

दर्शन से जिनके कटते हैं पाप, पूजन से मिटते हैं गुरुग्रह ताप,
मूरत सुहानी है–तेरी महावीरा, छवि जगन्यारी है–प्रभु महावीरा।।टेक.।।
भक्ति करके तेरी, मैं संताप मन का मिटाऊँ।
अपने मन में तेरी, प्रतिमा नाथ कैसे बिठाऊँ।।
तुम भगवन्, अतिपावन,
महिमा निराली है–तेरी महावीरा, छवि जग न्यारी है–तेरी महावीरा।।१।।

आज इस मण्डल पर, स्थापित करूँ नाथ! तुमको।
शांति गुरुग्रह की कर, स्वस्थ कर दो प्रभो आज मुझको।।
तुम भगवन्, अतिपावन,
महिमा निराली है–तेरी महावीरा, छवि जग न्यारी है–प्रभु महावीरा।।२।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अष्टक (स्रग्विणी छंद)

क्षीरसिन्धु नीर को मैं भरूँ भृंग में।
तीन धारा करूँ वीर पद पद्म में।।
वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
नाथ! ग्रह वृहस्पती दुःख दे रंच ना।।१।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीर की सुगन्धियुक्त केशर लिया।
घिस के नाथ के चरण में उसे चर्चिया।।
वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
नाथ! ग्रह वृहस्पती दुःख दे रंच ना।।२।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

वासमती के धुले तंदुलों को लिया।
श्रीजिनेन्द्र के निकट पुंज को चढ़ा दिया।।
वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
नाथ! ग्रह वृहस्पती दुःख दे रंच ना।।३।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भाँति भाँति के गुलाब पुष्प मैंने चुन लिया।
पुष्पमाल को बनाय प्रभु के पद चढ़ा दिया।।
वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
नाथ! ग्रह वृहस्पती दुःख दे रंच ना।।४।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध नैवेद्य को बनाय थाल भर लिया।
स्वस्थता की प्राप्ति हेतु प्रभु समीप धर लिया।।
वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
नाथ! ग्रह वृहस्पती दुःख दे रंच ना।।५।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णथाल में जले रत्नदीप जगमगे।
आरती उतारते ही मोह का तिमिर भगे।।

वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
नाथ! ग्रह वृहस्पती दुःख दे रंच ना।।६।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप कर्पूर मिश्रित जला अग्नि में।
नाथ चाहूँ जलाना आज कर्म मैं।।
वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
नाथ! ग्रह वृहस्पती दुःख दे रंच ना।।७।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव अंगूर अमरूद भर थाल में।
पादपद्म में चढ़ाय नाऊँ निज भाल मैं।।
वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
नाथ! ग्रह वृहस्पती दुःख दे रंच ना।।८।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलफलादिक अष्टद्रव्य को सजाय के।
''चन्दनामती'' अनर्घ्यपद मिले चढ़ाय के।।
वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
नाथ! ग्रह वृहस्पती दुःख दे रंच ना।।९।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा करूँ नाथ के पाद में।
शांति हो विश्व में यही मेरी आश है।।
वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
नाथ! ग्रह वृहस्पती दुःख दे रंच ना।।

शांतये शांतिधारा।

कल्पवृक्ष के सुमन हैं नहीं पास में।
ये ही कोमल कुसुम मैं लिया हाथ में।।
वीर महावीर वर्धमान की अर्चना।
नाथ! ग्रह वृहस्पती दुःख दे रंच ना।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(अब मण्डल के ऊपर गुरुग्रह के स्थान पर श्रीफल सहित अर्घ्य चढ़ावें)

महावीर प्रभू के चरणों में, श्रीफलयुत अर्घ्य चढ़ाएँ हम।
श्रद्धा से प्रभु पद कमलों में, भावों के कुसुम चढ़ाएँ हम।।
यदि जन्मकुंडली में गुरुग्रह, कुछ निम्नश्रेणी में रहता है।
गुण भी अवगुण की तरह बनें, अपमान भी सहना पड़ता है।।
''चन्दनामती'' ग्रह कष्ट न दें, बस यही भावना भाएँ हम।
श्रद्धा से प्रभु पदकमलों में, भावों के कुसुम चढ़ाएँ हम।।१।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक श्री महावीरजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक श्री महावीरजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

तर्ज-फिरकी वाली.....

वीरा वीरा, मेरे महावीरा, मेरे अतिवीरा, सन्मति वर्धमान है।
मैंने पूजन रचाई भगवान है।।टेक.।।
चैत्र सुदी तेरस के दिन जब, जन्मकल्याणक आया था।
स्वर्गों से इन्द्रों ने आकर, उत्सव खूब मनाया था।।
ऐरावत पर, तुमको लाकर, चला इन्द्र सह परिकर,
वीरा तुमको, सुमेरूपर्वत की, पांडुकशिला पर, किया विराजमान है।
जन्म अभिषव कर पुकारा तेरा नाम है।
वीरा वीरा, मेरे महावीरा, मेरे अतिवीरा, सन्मति वर्धमान है।
मैंने पूजन रचाई भगवान है।।१।।

यौवन में ही दीक्षा लेकर, बालयती कहलाए थे।
केवलज्ञान प्राप्त कर प्रभु जी, समवसरण में आए थे।।
दिव्यध्वनि से, सारे जग के,जीव हुए प्रतिबोधित,
वीरा तेरी, सुहानी वाणी, को सुनकर ज्ञानी, बने भगवान हैं।।
सारे जग का सितारा वर्धमान है।।
वीरा वीरा, मेरे महावीरा, मेरे अतिवीरा, सन्मति वर्धमान है।
मैंने पूजन रचाई भगवान है।।२।।
कार्तिक कृष्ण अमावस के दिन, सिद्ध अवस्था पाई थी।
पावापुरि नगरी में सबने, दीपावली मनाई थी।।
युग के अंतिम, तीर्थंकर तुम, करे ''चन्दना'' वन्दन,
वीरा तेरी, अमर है कहानी, सभी ने जानी, न तुझ सी कोई शान है।
सारे जग का सितारा वर्धमान है।
वीरा वीरा, मेरे महावीरा, मेरे अतिवीरा, सन्मति वर्धमान है।
मैंने पूजन रचाई भगवान है।।३।।
गुरु ग्रह के स्वामी महावीरा, मेरा गुरु ग्रह उच्च करो।
धर्म में रुचि हो ज्ञान बढ़े, गुरु सम प्रभु रक्षा स्वयं करो।
ऋद्धि सिद्धि में, होवे वृद्धी, पाऊँ धन समृद्धी,
वीरा तेरी, सुखद है कहानी, जगत कल्याणी, सभी को मान्य है।
मैंने पूजन रचाई भगवान है।।४।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—दोहा—

महावीर भगवान की, पूजा भक्ति महान।
इनकी पूजा से मिले, क्रमशः पद निर्वाण।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

पूजा नं. ७

शुक्रग्रहारिष्ट निवारक

श्री पुष्पदन्तनाथ पूजा

स्थापना-शंभु छंद

हे पुष्पदन्त भगवान् पुष्प तव, चरणों में जब चढ़ता है।
पूजन की विधि में सर्वप्रथम, स्थापन कर वह कहता है।।
हो गया जन्म सार्थक मेरा, प्रभुपद में जब स्थान मिला।
मैं धूल में गिरकर मिट जाता, लेकिन यह तो सौभाग्य खिला।।१।।

—दोहा—

आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण प्रधान।
पुष्पदन्त की अर्चना, क्रमशः दे निर्वाण।।२।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

-अष्टक-

—चामर छंद—

साधुचित्त के समान शुद्ध नीर ले लिया।
धार दे जिनेन्द्रपाद भव का तीर ले लिया।।
पुष्पदंतनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।१।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य चन्दन की ही प्रतीक केशर मेरी।
पादपद्म में विलेपते सुगंधि है मिली।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।२।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तुच्छ तंदुलों में मोतियों की कल्पना मेरी।
नाथ! पूर्ण होएगी जरूर साधना मेरी।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।३।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूल हों या पीले चावलों में पुष्पभावना।
अर्चना के रूप में फलेगी मेरी भावना।।
पुष्पदंतनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शांति का सदैव पूर हो।।४।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खीर और पूरियों को थाल में भरा लिया।
भूख व्याधि शांति के लिए चरू चढ़ा दिया।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।५।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपकों की ज्योति से प्रकाश फैलता सदा।
प्रभु की आरती से मन की ज्योति पाऊँ सर्वदा।।

पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।६।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपघट में खेके पापकर्म नाश हों।
श्रीजिनेन्द्र की कृपा से पुण्य का विकास हो।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।७।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्फलों से युक्त मोक्षफल की याचना करूँ।
द्राक्ष आम्र आदि अर्प्य यह ही भावना करूँ।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।८।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलफलादि द्रव्य ले करूँ जिनेन्द्र अर्चना।
तुम समान पद मिले, आश यह ही ''चन्दना''।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रह अरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।९।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय की प्राप्ति हेतु तीन धार मैं करूँ।
जन्म औ जरा मरण त्रिरोग नाश मैं करूँ।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रहअरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

श्री जिनेन्द्र के समीप पुष्प अंजली भरूँ।
पुष्प को बिखेर कर सुगंधि सर्वदिक् करूँ।।
पुष्पदन्तनाथ! शुक्रग्रहअरिष्ट दूर हो।
मेरी आत्मा में शान्ति का सदैव पूर हो।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(अब मण्डल के ऊपर शुक्रग्रह के स्थान पर श्रीफल सहित अर्घ्य चढ़ावें)

तर्ज-चाँद मेरे आ जा रे.....

नाथ की पूजन करते हैं-२,
अष्टद्रव्य, की थाली प्रभू के, चरणों में धरते हैं।।नाथ की.....।।टेक.।।

जब अशुभ कर्म के कारण, तन में व्याधी आती है।
धनहानि कलह आदिक से, मन में आंधी आती है।।
नाथ की पूजन करते हैं।।१।।

प्रभु पुष्पदंत तीर्थंकर, ग्रहशुक्र के स्वामी माने।
वे इस ग्रह की शान्ती में, ''चन्दना'' प्रमुख हैं माने।।
नाथ की पूजन करते हैं।।२।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्यपुष्पांजलिः

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

भगवान् तुम्हारी पूजन से, सम्यग्दर्शन मिल जाता है।
हे नाथ! तुम्हारे अर्चन से, निज अन्तर्मन खिल जाता है।।टेक०।।
जैसे अंगार दहकता है, जल सबकी प्यास बुझाता है।
सूरज जैसे देकर प्रकाश, धरती का तिमिर भगाता है।।
वैसे ही प्रभु मुख दर्शन से, मानों सब कुछ मिल जाता है।
हे नाथ! तुम्हारे अर्चन से, निज अन्तर्मन खिल जाता है।।१।।
दर्शन के भाव हुए जिस क्षण, उपवास का फल प्रारंभ हुआ।
चलकर जब पहुँच गए मंदिर, लक्षोपवास फल सहज हुआ।।

प्रभु सम्मुख आ गद्गद मन से, भव भव का अघ धुल जाता है।
हे नाथ! तुम्हारे अर्चन से, निज अन्तर्मन खिल जाता है।।२।।

भक्ती में शक्ति अचिन्त्य कही, यह भुक्ति मुक्ति सब कुछ देती।
जिनप्रतिमा भले अचेतन हैं, फिर भी चेतन को फल देतीं।।
पौराणिक कथन ''चन्दना यह, कलियुग में भी फलदाता है।
हे नाथ! तुम्हारे अर्चन से, निज अन्तर्मन खिल जाता है।।३।।

हो शुक्र अनिष्ट यदी प्रभुवर, दुख इष्ट वियोग सताता है।
यह शुभ हो जावे यदि जिनवर, सांसारिक सौख्य दिलाता है।।
प्रभु पुष्पदन्त भगवान् तेरी, भक्ती से सब मिल जाता है।
हे नाथ! तुम्हारे अर्चन से, निज अन्तर्मन खिल जाता है।।४।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः

पुष्पदंत की अर्चना, हरे सकल दुख दोष।
करे शुक्रग्रह सान्त्वना, भरे स्वात्मसुख तोष।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

पूजा नं. ८

शनिग्रहारिष्ट निवारक
श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्र पूजा

स्थापना–गीता छंद

मुनिसुव्रतेश जिनेन्द्र की, हम सब करें आराधना।
शनिग्रह अरिष्ट विनाश हेतू, भक्ति से हो साधना।।
शनिवार को प्रभु निकट में, विधिवत् करें यदि अर्चना।
तो सत्य ही दुख दूर होकर, पूर्ण होगी प्रार्थना।।१।।

–दोहा–

पूजा के प्रारंभ में, आह्वानन इत्यादि।
स्थापन सन्निधिकरण, की विधि कही अनादि।।२।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अष्टक–सोरठा

जल ले अमल सुस्वादु, धार करूँ जिनपदकमल।
शनिग्रह शान्ती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।१।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर लेय, चर्चूं श्री जिनपदकमल।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।२।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल धवल अखण्ड, अर्पूं जिनवर पद निकट।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।३।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला कुंद गुलाब, पुष्प चढ़ाऊँ प्रभु चरण।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।४।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डू मोतीचूर, अर्पूं थाल भराय के।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।५।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतदीपक की ज्योति, मोहतिमिर को क्षय करे।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।६।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर की धूप, खेऊँ मैं जिनवर निकट।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।७।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ले मधुर रसाल, अर्पूं शिवफल प्राप्त हो।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।८।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुविधि अर्घ्य बनाय चरण चढ़ाऊँ चंदना।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।९।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा— **त्रयरोगों की शांति हित, धारा तीन करंत।**
तीन रत्न यदि प्राप्त हों, भवदधि शीघ्र तरंत।।

शांतये शांतिधारा।

चंप चमेली केवड़ा, सुरभित पुष्प मंगाय।
जिनगुणसुरभि मिले मुझे, जिनवर चरण चढ़ाय।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(अब मण्डल के ऊपर शनिग्रह के स्थान पर श्रीफल सहित अर्घ्य चढ़ावें)

तर्ज-हे वीर तुम्हारे.....

भगवान् तुम्हारी भक्ती से, भव के बन्धन खुल जाते हैं।
मुनिसुव्रत प्रभु की भक्ती से, शनि के क्रन्दन धुल जाते हैं।।
इस ग्रह के कारण हे स्वामी!, तन धन की हानि सही मैंने।
सहने में हो असमर्थ नाथ, अब तुमसे व्यथा कही मैंने।।
यह सुना बहुत तुम चिन्तन से, अवरुद्ध मार्ग खुल जाते हैं।
मुनिसुव्रत प्रभु की भक्ती से, शनि के क्रन्दन धुल जाते हैं।।१।।

नवग्रह में सबसे क्रूर शनी, इसको कर शान्त सुखी कीजे।
निजनाममंत्र की एक मणी, स्वामी अब मुझको दे दीजे।।
''चन्दनामती'' इस युक्ती से, शिव के पथ भी खुल जाते हैं।
मुनिसुव्रत प्रभु की भक्ती से, शनि के क्रन्दन धुल जाते हैं।।२।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः!

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

तर्ज–हम लाए हैं तूफान से........

हम आए हैं प्रभु पास में, पूजा रचाने को।
जयमाल के माध्यम से, निज व्यथा सुनाने को।।टेक.।।

केवल जनम मरण में ही, पर्याय बिताई।
कुछ पुण्ययोग से ही, त्रसपर्याय अब पाई।।
शक्ती मिले चिन्तन करें, आतम जगाने को।
जयमाल के माध्यम से, निज व्यथा सुनाने को।।१।।

स्वर्गों के सुख भोगे पशू की, योनि भी पाई।
नरकों में रो रोकर वहाँ की, आयु बिताई।।
नरतन प्रभो सार्थक करूँ, निज शान्ति पाने को।
जयमाल के माध्यम से, निज व्यथा सुनाने को।।२।।

सम्यक्त्व की महिमा से, आतम शुद्ध बनाऊँ।
शुभ देव शास्त्रगुरु के प्रति, कर्तव्य निभाऊँ।।
फिर ''चन्दनामती'' क्रम से, स्वर्ग मोक्ष पाने को।
जयमाल के माध्यम से, निजव्यथा सुनाने को।।३।।

शनिग्रह से मेरी मानसिक, व्यथाएँ बढ़ी हैं।
परिवार में कलह व कष्ट, की ये घड़ी है।।
बस इसलिए तुमसे कहा, संकट मिटाने को।
जयमाल के माध्यम से, निज व्यथा सुनाने को।।४।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अष्टक–सोरठा

स्वर्गमोक्षदातार, तीर्थंकर की भक्ति है।
सिद्ध सौख्यसाकार, करती आतमशक्ति है।।

इत्याशीर्वादः

९ ९ ९ ९ ९

पूजा नं.९

राहुग्रहारिष्ट निवारक
श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र पूजा

स्थापना–अडिल्लछन्द

बाइसवें तीर्थंकर नेमीनाथ हैं।
इनके तप की कथा जगत विख्यात है।।
राहू ग्रह की शांति हेतु मैं पूजहूँ।
आह्वानन स्थापन विधि से मैं जजूँ।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्टनिवारक श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्टनिवारक श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्टनिवारकश्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरण स्थापनं।

—अष्टक—

तर्ज–धीरे-धीरे बोल............

नेमिनाथ प्रभू जी की पूजा कर लो, पूजा कर लो प्रभू पूजा कर लो।
प्रभु पूजा ही बस सार है, बाकी संसार असार है।
नेमिनाथ प्रभू जी की पूजा कर लो, पूजा कर लो प्रभु पूजा कर लो।।टेक.।।

जल का कलश लिया है मैंने हाथ में,
जलधारा मैं करूँ जिनेश्वर पाद में।
जनम जरा अरु मरण नशें त्रय ताप हैं,
जग में रहकर भी पाऊँ सुखशान्ति मैं।।
पूजा करो, अर्चा करो,
प्रभु पूजा ही बस सार है, बाकी संसार असार है।।नेमिनाथ.।।१।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्टनिवारक श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर कर्पूर सहित घिसी,
जिनवर के चरणों में उसको चर्च दी।
वह केशर मस्तक के रोग निवारती,
तिलक करो तो सिद्धी होती कार्य की।।
पूजा करो, अर्चा करो,
प्रभु पूजा ही बस सार है, बाकी संसार असार है।।नेमीनाथ.।।२।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्टनिवारक श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ्र श्वेत तन्दुल धोकर अक्षत बना,
पुंज चढ़ा कर चाहूँ मैं अक्षयपना।
भावसहित वह चावल ही मोती बना,
मनोवती सम मैं भी फल पाऊँ घना।
पूजा करो, अर्चा करो,
प्रभु पूजा ही बस सार है, बाकी संसार असार है।।नेमीनाथ.।।३।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्टनिवारक श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चुन चुन कर उपवन से फूल मंगा लिए,
अंजलि भरकर प्रभु के पास चढ़ा दिये।
भाग्य खिला उन पुष्पों का जो चढ़ गये,
बाकी तो खिलकर पेड़ों से झड़ गये।।
पूजा करो, अर्चा करो,
प्रभु पूजा ही बस सार है, बाकी संसार असार है।।नेमीनाथ.।।४।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्टनिवारक श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भोजन हर तन की भूख मिटा रहा,
वह भोजन आतम की व्यथा बढ़ा रहा।

वह यदि प्रभु की पूजा में चढ़ जाएगा,
कर्म वेदनी भव भव का घट जाएगा।
पूजा करो, अर्चा करो,
प्रभु पूजा ही बस सार है, बाकी संसार असार है।।नेमीनाथ.।।५।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्टनिवारक श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक पूजा प्रभु पूजा का अंग है,
अष्टद्रव्य में दीपक भी इक द्रव्य है।
थाल सजाकर दीप जला आरति करूँ,
मोहतिमिर को घटा सकल आरत हरूँ।।
पूजा करो, अर्चा करो,
प्रभु पूजा ही बस सार है, बाकी संसार असार है।।नेमीनाथ.।।६।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्टनिवारक श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध धूप को बना अग्नि में दहन की,
एक यही इच्छा कर्मों के हवन की।
धूप जलाना प्रभु पूजा का अंग है,
उसके बिन कैसे जल सकते कर्म हैं।।
पूजा करो, अर्चा करो,
प्रभु पूजा ही बस सार है, बाकी संसार असार है।।नेमीनाथ.।।७।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्टनिवारक श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

खट्टे मीठे फल को एकत्रित किया,
स्वर्णथाल में लेकर उन्हें चढ़ा दिया।
सुना बहुत सतियों को उत्तम फल दिया,
इसीलिए प्रभु मैंने तुम्हें नमन किया।।

पूजा करो, अर्चा करो,
प्रभु पूजा ही बस सार है, बाकी संसार असार है।।नेमीनाथ.।।८।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्टनिवारक श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत अरु पुष्प मंगाय के,
चरु दीपक धूपम् फल आदि मिलाय के।
अर्घ्य थाल ''चन्दना'' चढ़ाऊँ आज मैं,
पद अनर्घ्य पा बैठूँ प्रभु के पास में।।

पूजा करो, अर्चा करो,
प्रभु पूजा ही बस सार है, बाकी संसार असार है।।नेमीनाथ.।।९।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्टनिवारक श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टद्रव्य को चढ़ा शांतिधारा करूँ,
शांति बढ़े धरती पर यह आशा करूँ।
हो सुभिक्षता क्षेम प्रेम मैत्री बढ़े,
पृथिवी से दुर्भिक्ष अनिष्ट सभी हटे।।

पूजा करो, अर्चा करो,
प्रभु पूजा ही बस सार है, बाकी संसार असार है।।नेमीनाथ.।।१०।।

शांतये शांतिधारा

बेला चंप चमेली की कलियाँ जहाँ,
खिल जातीं तो वातावरण महक रहा।
उन पुष्पों की अंजलि भर पूजा करूँ,
पर्यावरण प्रदूषण दूर किया करूँ।।

पूजा करो, अर्चा करो,
प्रभु पूजा ही बस सार है, बाकी संसार असार है।।नेमीनाथ.।।१०।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(अब मण्डल पर राहुग्रह के स्थान पर श्रीफल सहित अर्घ्य चढ़ावें)

हे नेमिनाथ भगवान् मेरे, तन में बढ़ गई असाता है।
होती है अरुचि धर्म में भी, शूगर का रोग सताता है।।

तुम भक्ती में कुछ रुची बनी, इसलिए विनय यह है मेरी।
राहू ग्रह की बाधा हरकर, ''चन्दना'' व्याधि हर लो मेरी।।१।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्टनिवारक श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्टनिवारक श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

तर्ज-लेके पहला-पहला.....

जय जय नेमिनाथ भगवान्, हम करते तेरा गुणगान,
तेरी पूजन से मिटता है तिमिर अज्ञान।।
करते प्रभू जगत कल्याण, तुमने पाया पद निर्वाण,
तेरी पूजन से मिटता है तिमिर अज्ञान।।टेक.।।
राजुल को त्यागा प्रभु जी, ब्याह न रचाया।
गिरनार गिरि पर जाकर, योग लगाया।
प्राप्त हुआ फिर केवलज्ञान, दूर हुआ सारा अज्ञान,
तेरी पूजन से मिटता है तिमिर अज्ञान।।१।।
शिवादेवी माता तुमसे, धन्य हुई थीं।
शौरीपुरी की जनता, पुलकित हुई थी।।
समुद्रविजय की कीर्ति महान, गाई सुरइन्द्रों ने आन,
तेरी पूजन से मिटता है तिमिर अज्ञान।।२।।
राहुग्रह की शांति हेतु, पूजा रचाऊँ।
तेरे गुण गाके प्रभुजी, निजगुण को पाऊँ।।
करे ''चन्दना'' तव गुणगान, होवे मेरा भी कल्याण,
तेरी पूजन से मिटता है तिमिर अज्ञान।।३।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्टनिवारक श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

दोहा — **नेमिनाथ भगवान् की, पूजन है सुखकार।**
दर्शन-वन्दन सब करो, शौरीपुर-गिरनार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

पूजा नं. १०

केतुग्रहारिष्ट निवारक

श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र पूजा

स्थापना–गीता छंद

तर्ज–आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं.....

चलो सभी मिल पूजन कर लें, पार्श्वनाथ भगवान की।
केतू ग्रह की बाधा हरने, वाले प्रभू महान की।।
वन्दे जिनवरम्-२, वन्दे जिनवरम्-२।।टेक.।।

हम सब प्रभु की पूजन हेतू, आह्वानन विधि करते हैं।
स्थापन सन्निधीकरण, करके आतम निधि वरते हैं।।
आओ तिष्ठो प्रभु मुझ मन में, कुछ तो शक्ति प्रदान करो।
निज सम धैर्य-क्षमा गुण देकर, मेरा भी उत्थान करो।।
पारस प्रभु की पूजन से, बनते पारस भगवान भी।
केतू ग्रह की बाधा हरने, वाले प्रभू महान की।।
वन्दे जिनवरम्-२, वन्दे जिनवरम्-२।

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

–अष्टक–

तर्ज–हे माँ तेरी सूरत.....

हे नाथ! तुम्हारी पूजन को, हम थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान्.....भगवान् तुम्हारे चरणों में, ग्रहशांती करने आए हैं।।

भव भव में प्रभु हमने, कितना जल पी डाला।
पर शांत न हो पाई, मेरे मन की ज्वाला।।
भव भव के ताप मिटाने को, जलधारा करने आए हैं।
भगवान तुम्हारे चरणों में, ग्रह शांती करने आए हैं।।१।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! तुम्हारी पूजन को, हम थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान्.....भगवान् तुम्हारे चरणों में, ग्रहशांती करने आए हैं।।
मेरे चैतन्य सदन में, क्रोधाग्नी जलती है।
अज्ञान के अंचल में, छिप-छिप वह पलती है।।
हम इसीलिए चन्दन लेकर, भवताप मिटाने आए हैं।।
भगवान तुम्हारे चरणों में, ग्रहशांती करने आए हैं।।२।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! तुम्हारी पूजन को, हम थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान्.....भगवान् तुम्हारे चरणों में, ग्रहशांती करने आए हैं।।
मेरा जीवन खंडित है, मद मोह व माया में।
अब करना अखंडित है, प्रभु शीतल छाया में।।
अतएव अखण्डित पुंजों से, अक्षय पद पाने आए हैं।
भगवान तुम्हारे चरणों में, ग्रह शांती करने आए हैं।।३।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! तुम्हारी पूजन को, हम थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान्.....भगवान् तुम्हारे चरणों में, ग्रहशांती करने आए हैं।।
कितने उद्यानों में जा, पुष्पों की गंध लिया।
कभी घर को सजाया मैंने, कभी निज शृँगार किया।।

अब तेरे पावन चरणों में, हम पुष्प चढ़ाने आए हैं।
भगवान तुम्हारे चरणों में, ग्रह शांती करने आए हैं।।४।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! तुम्हारी पूजन को, हम थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान्.....भगवान् तुम्हारे चरणों में, ग्रहशांती करने आए हैं।।
हमने कितने भव-भव में, पकवान बहुत खाए।
लेकिन इस नश्वर तन की, नहिं भूख मिटा पाए।।
क्षुधरोग निवारण हेतु प्रभो! नैवेद्य थाल भर लाए हैं।
भगवान तुम्हारे चरणों में, ग्रह शांती करने आए हैं।।५।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! तुम्हारी पूजन को, हम थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान्.....भगवान् तुम्हारे चरणों में, ग्रहशांती करने आए हैं।।
अज्ञान नगर में मेरा, चिरकाल से है रमना।
नृप मोह के बन्धन में, नहिं पूर्ण हुआ सपना।।
अज्ञान अंधेर मिटाने को, हम दीप जलाकर लाए हैं।।
भगवान तुम्हारे चरणों में, ग्रह शांती करने आए हैं।।६।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! तुम्हारी पूजन को, हम थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान्.....भगवान् तुम्हारे चरणों में, ग्रहशांती करने आए हैं।।
हमने कर्मों में निज को, आनन्दित माना है।
अतएव निजातम सुख को, किञ्चित् नहिं जाना है।।
कर्मों के ज्वालन हेतु प्रभो! हम धूप जलाने आए हैं।
भगवान तुम्हारे चरणों में, ग्रह शांती करने आए हैं।।१७।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! तुम्हारी पूजन को, हम थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान्.....भगवान् तुम्हारे चरणों में, ग्रहशांती करने आए हैं।।
मैं क्षणिक विनश्वर फल के, स्वादों में फँसा रहा।
जिह्वा की लोलुपता में, उत्तमफल को न लहा।।
तुम सम फल की प्राप्ती हेतू, फल थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान तुम्हारे चरणों में, ग्रह शांती करने आए हैं।।८।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! तुम्हारी पूजन को, हम थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान्.....भगवान् तुम्हारे चरणों में, ग्रहशांती करने आए हैं।।
मैं अष्टद्रव्य ले करके, तव सन्निध आया हूँ।
अष्टम वसुधा पाने को, मैं भी ललचाया हूँ।।
''चन्दना'' सिद्ध पद प्राप्ति हेतु, कुछ भक्त तेरे दर आए हैं।
भगवान तुम्हारे चरणों में, ग्रह शांती करने आए हैं।।९।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज-करती हूँ तुम्हारी भक्ति.....

जब तक गंगा यमुना में, जलधार बहेगी।
तब तक पारस प्रभु की भक्ती, रसधार बहेगी।।
हे पार्श्वप्रभू जी, हे पार्श्वप्रभू जी।
कंचन झारी से चरणों में, त्रयधारा करनी है।
सांसारिक जन्म जरा मृत्यू की, बाधा हरनी है।।
जब तक केतू के कष्टों की, नहिं हानि रहेगी।
तब तक पारस प्रभु की भक्ती, रसधार बहेगी।
हे पार्श्वप्रभू जी, हे पार्श्वप्रभू जी।।१।।

शांतये शांतिधारा।

जब तक स्वर्गों में कल्पवृक्ष का, वास रहेगा।
पारसप्रभु के गुणपुष्पों का, इतिहास रहेगा।।
जय पारस देवा, जय पारस देवा।।
चम्पा चमेली पुष्पों से पुष्पांजलि करना है।
आत्मीक गुणों से अन्तर्मन को, पुष्पित करना है।।
उनका अर्चन केतू की बाधा, ह्रास करेगा।
पारस प्रभु के गुणपुष्पों का, इतिहास रहेगा।।
जय पारस देवा, जय पारस देवा।।२।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(अब मण्डल पर केतुग्रह के स्थान पर श्रीफल सहित अर्घ्य चढ़ावें)

तर्ज-आए महावीर भगवान.....

कर लो पारस प्रभु का ध्यान, तुम पारस बन जाओगे।
तुम पारस बन जाओगे, मुक्ति श्री पा जाओगे।। कर लो.।।टेक.।।
ग्रह केतु अरिष्ट की शान्ती, होवे तब मिटे अशान्ती।
भय भागें सब इक क्षण में, नहिं चोट लगे मेरे तन में।।
''चन्दना'' करो गुणगान, तुम पारस बन जाओगे।। कर लो.।।१।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

तर्ज-तुमसे लागी लगन.....

जय जय पारस प्रभो, भवदधितारक विभो, द्वार आया।
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।टेक.।।
गर्भ से मास छह पूर्व नगरी, रत्नमय वह बनारस पुरी थी।
इन्द्रगण आ गए, चक्रधर पा गए, तेरी छाया।
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।१।।

जन्म होते ही कम्पित मुकुट थे, दिव्य बाजे स्वयं बज उठे थे।
जग चकित हो गया, मोह तम खो गया, प्रभु की माया।
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।२।।

वामानन्दन हो पारस प्रभो तुम, अश्वसेन के प्रिय लाल हो तुम।
धर्मामृत जो बहा, ज्ञानामृत को लहा, जो भी आया।
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।३।।

केतु ग्रह की सभी बाधा हर लो, उच्च पद यशसहित मुझको कर दो।
विघ्नविजयी हो तुम, मृत्युविजयी हो तुम, सिद्धि पाया।
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।४।।

तेरी भक्ती का फल मैं यह चाहूँ, कंठ अपना अकुंठित बनाऊँ।
''चन्दनामती'' प्रभो, मांगते सब विभो, तेरी छाया।
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।५।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

पार्श्वनाथ की भक्ति का, जो करते रसपान।
अपनी आतमशक्ति की, वे करते पहचान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

बड़ी जयमाला

तर्ज–जो नर पीवे जिनधर्म.....

नवग्रह की पूजन सब कर लो, रोग सभी नश जाएँगे।
श्रीजिनवर की अर्चन कर लो, पाप सभी कट जाएँगे।।टेक.।।
मस्तक में अज्ञान भरा है, श्रुत का सार नहीं भाता।
प्रभु चरणों में शीश झुका लो, रोग सभी नश जाएँगे।।
नवग्रह की पूजन सब कर लो, रोग सभी नश जाएँगे।
श्रीजिनवर की अर्चन कर लो, पाप सभी कट जाएँगे।।१।।
कर्णेन्द्रिय को अब जिनवाणी, सुनने का अभ्यास नहीं।
मन्दिर में आ प्रवचन सुन लो, रोग सभी नश जाएँगे।।
नवग्रह की पूजन सब कर लो, रोग सभी नश जाएँगे।
श्रीजिनवर की अर्चन कर लो, पाप सभी कट जाएँगे।।२।।
रंग बिरंगे रूप निरखना, इन अँखियन को भाता है।
प्रभु मुद्रा का तेज निरख लो, रोग सभी नश जाएँगे।।
नवग्रह की पूजन सब कर लो, रोग सभी नश जाएँगे।
श्रीजिनवर की अर्चन कर लो, पाप सभी कट जाएँगे।।३।।
इत्रफुलेल सुगंधित द्रव्यों, को घ्राणेन्द्रिय चाह रही।
प्रभु के गुण की सुरभी ले लो, रोग सभी नश जाएँगे।।
नवग्रह की पूजन सब कर लो, रोग सभी नश जाएँगे।
श्रीजिनवर की अर्चन कर लो, पाप सभी कट जाएँगे।।४।।
रसना अरु स्पर्शन को, खाने पीने का शौक चढ़ा।
प्रभु भक्ती का अमृत चख लो, रोग सभी नश जाएँगे।।
नवग्रह की पूजन सब कर लो, रोग सभी नश जाएँगे।
श्रीजिनवर की अर्चन कर लो, पाप सभी कट जाएँगे।।५।।
पञ्चेन्द्रिय विषयों को प्रभु ने, त्याग दिया क्षण भर में ही।
इसीलिए इनकी छाया पा, रोग सभी नश जाएँगे।।

नवग्रह की पूजन सब कर लो, रोग सभी नश जाएँगे।
श्रीजिनवर की अर्चन कर लो, पाप सभी कट जाएँगे।।६।।
जन्मकुंडली में यदि ये ग्रह, अशुभ जगह पर रहते हैं।
दुःख मिले यदि प्रभु पद नम लो, रोग सभी नश जाएँगे।।
नवग्रह की पूजन सब कर लो, रोग सभी नश जाएँगे।
श्रीजिनवर की अर्चन कर लो, पाप सभी कट जाएँगे।।७।।
प्रभु भक्ती से ही ये सब ग्रह, उच्च और शुभ बन जाते।
पूजन से इनको शुभ कर लो, रोग सभी नश जाएँगे।।
नवग्रह की पूजन सब कर लो, रोग सभी नश जाएँगे।
श्रीजिनवर की अर्चन कर लो, पाप सभी कट जाएँगे।।८।।
जन्म जन्म में संचित अघ, प्रभु नाममात्र से कटते हैं।
अतः नाम जिनवर का जप लो, रोग सभी नश जाएँगे।।
नवग्रह की पूजन सब कर लो, रोग सभी नश जाएँगे।
श्रीजिनवर की अर्चन कर लो, पाप सभी कट जाएँगे।।९।।
तन मन धन का कष्ट दूर हो, आश यही ''चन्दना'' मेरी।
सब मिल अर्घ्य चढ़ाओ प्रभु को, रोग सभी नश जाएँगे।।
नवग्रह की पूजन सब कर लो, रोग सभी नश जाएँगे।
श्रीजिनवर की अर्चन कर लो, पाप सभी कट जाएँगे।।१०।।

दोहा — **नवग्रह का ग्रह शान्त हो, इच्छित फल हो प्राप्त।**
मन की शुद्धी पूर्ण कर, बनूँ शीघ्र मैं आप्त।।११।।

ॐ ह्रीं नवग्रहारिष्टनिवारक श्रीनवतीर्थंकरचरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

शेरछंद — **जो भव्यजीव नवग्रहों की, शान्ति चाहते।**
वे सुखसमृद्धि प्राप्त करें, इस विधान से।।
यह जिनवरों की अर्चना, सम्यक्त्व क्रिया है।
फल भुक्ति मुक्ति ''चन्दनामति'' सार्थ हुआ है।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

प्रशस्ति

—दोहा—

आश्विन कृष्ण चतुर्दशी, श्राद्ध पूर्व तिथि ख्यात।
वीर संवत् पच्चीस सौ, पच्चिस का चौमास।।१।।

दिल्ली नगरी में हुआ, वर्षायोग महान।
ज्ञानमती गणिनीप्रमुख, संघ सहित वरदान।।२।।

उनकी शिष्या चन्दनामति, ने रचा विधान।
नवग्रह शांति हेतु यह, रचना पूरण जान।।३।।

नवग्रह की बाधाओं से, दुखित जगत के जीव।
उन ग्रह की पूजाओं से, होवें सुखी सदैव।।४।।

जब तक नभ में ग्रह रहे, हो उन संग संबंध।
तब तक नवग्रहशांति का, होता रहे प्रबंध।।५।।

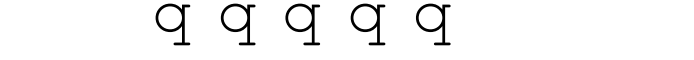

आरती

तर्ज-चाँद मेरे आ जा रे.....

आरती नवग्रह स्वामी की-२
ग्रह शांति हेतू तीर्थंकरों की, सब मिल करो आरतिया।।टेक.।।

आत्मा के संग अनादी, से कर्मबंध माना है।
उस कर्मबंध को तजकर, परमातम पद पाना है।
आरती नवग्रह स्वामी की।।१।।

निज दोष शांत कर जिनवर, तीर्थंकर बन जाते हैं।
तब ही पर ग्रहनाशन में, वे सक्षम कहलाते हैं।
आरती नवग्रह स्वामी की।।२।।

जो नवग्रह शांती पूजन, को भक्ति सहित करते हैं।
उनके आर्थिक-शारीरिक, सब रोग स्वयं टरते हैं।
आरती नवग्रह स्वामी की।।३।।

कंचन का दीप जलाकर, हम आरति करने आए।
''चन्दनामती'' मुझ मन में, कुछ ज्ञानज्योति जल जाए।।
आरती नवग्रह स्वामी की।।४।।

नवग्रह शांति स्तोत्र (भाषा)

(इस 'नवग्रहशांति स्तोत्र' में चौबीसों तीर्थंकर भगवन्तों द्वारा नवग्रहों की शांति का वर्णन किया गया है। यह संस्कृत के नवग्रह शांति स्तोत्र का पद्यानुवाद है।)

त्रैलोक्यगुरू तीर्थंकर प्रभु को, श्रद्धायुत मैं नमन करूँ।
सत्गुरु के द्वारा प्रतिभासित, जिनवर वाणी को श्रवण करूँ।।
भवदुःख से दुःखी प्राणियों को, सुख प्राप्त कराने हेतु कहूँ।
कर्मोदय वश संग लगे हुए, ग्रह शांति हेतु जिनवचन कहूँ।।१।।

नभ में सूरज चन्दा ग्रह के, मंदिर में जो जिनबिम्ब अधर।
निज तुष्टि हेतु उनकी पूजा, मैं करूँ पूर्ण विधि से रुचिधर।।
चन्दन लेपन पुष्पाञ्जलि कर, सुन्दर नैवेद्य बना करके।
अर्चना करूँ श्री जिनवर की, मलयागिरि धूप जलाकर के।।२।।

ग्रह सूर्य अरिष्ट निवारक श्री, पद्मप्रभु स्वामी को वन्दूँ।
श्री चन्द्र भौम ग्रह शांति हेतु, चन्द्रप्रभु वासुपूज्य वन्दूँ।।
बुध ग्रह से होने वाले कष्ट, निवारक विमल अनंत जिनम्।
श्री धर्म शान्ति कुन्थू अर नमि, सन्मति प्रभु को भी करूँ नमन।।३।।

प्रभु ऋषभ अजित जिनवर सुपार्श्व, अभिनन्दन शीतल सुमतिनाथ।
गुरुग्रह की शांति करें संभव, श्रेयांस जिनेश्वर अभी आठ।।
ग्रह शुक्रअरिष्टनिवारक भगवन्, पुष्पदंत जाने जाते।
शनि ग्रह की शांती में हेतू, मुनिसुव्रत जिन माने जाते।।४।।

श्री नेमिनाथ तीर्थंकर प्रभु, राहू ग्रह की शांती करते।
श्री मल्लि पार्श्व जिनवर दोनों, केतू ग्रह की बाधा हरते।।
ये वर्तमानकालिक चौबिस, तीर्थंकर सब सुख देते हैं।
आधी व्याधी का क्षय करके, ग्रह की शांती कर देते हैं।।५।।

आकाशगमन वाले ये ग्रह, यदि पीड़ित किसी को करते हैं।
प्राणी की जन्मलग्न एवं, राशी के संग ग्रह रहते हैं।।
तब बुद्धिमान जन तत्सम्बन्धित, ग्रह स्वामी को भजते हैं।
जिस ग्रह के नाशक जो जिनवर, उन नाम मंत्र वे जपते हैं।।६।।

इस युग के पंचम श्रुतकेवलि, श्री भद्रबाहु मुनिराज हुए।
वे गुरु इस नवग्रह शांती की, विधि बतलाने में प्रमुख हुए।।
जो प्रातः उठकर हो पवित्र, तन मन से यह स्तुति पढ़ते।
वे पद-पद पर आने वाली, आपत्ति हरें शांती लभते।।७।।

—दोहा—

नवग्रह शांती के लिए, नमूँ जिनेश्वर पाद।
तभी ''चन्दना'' क्षेम सुख, का मिलता साम्राज्य।।८।।

ꣿ ꣿ ꣿ ꣿ ꣿ

नवग्रहशांति स्तोत्र

रचयित्री–आर्यिका चन्दनामती

—शंभु छन्द—

सिद्धों का वंदन इस जग में, आतम सिद्धि का कारण है।
इनकी भक्ति से भक्त करें, दुर्गति का सहज निवारण है।।
सब तीर्थंकर भगवंत एक दिन, सिद्धि प्रिया को पाते हैं।
इसलिए सभी ग्रह की शांति में, वे निमित्त बन जाते हैं।।१।।

नभ में जो सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरू व शुक्र, शनि ग्रह माने।
राहू केतू मिलकर नवग्रह, ज्योतिषी देव के ग्रह माने।।
मानव के जन्म समय से ये, सब जन्मकुण्डली में रहते।
शुभ-अशुभ आदि फल देने में, राशी अनुसार निमित बनते।।२।।

जब ग्रह अनिष्टकारी होवे, तब प्रभु भक्ती रक्षा करती।
जिनसागर सूरि ने बतलाया, नवग्रह में नव प्रभु की भक्ती।।
श्रीपद्मप्रभ भगवान सूर्य ग्रह, के अरिष्ट को शांत करें।
ग्रह सोम का जब होवे प्रकोप, तब भक्त चन्द्रप्रभु याद करें।।३।।

निज मंगल ग्रह की शांति हेतु, प्रभु वासुपूज्य को नमन करो।
बुधग्रह जब देवे कष्ट तुरत, प्रभु मल्लिनाथ अर्चन कर लो।।
महावीर प्रभू गुरु ग्रह से होने, वाले कष्ट मिटाते हैं।
निज गुरुबल तेजस्वी करने हित, वर्धमान को ध्याते हैं।।४।।

श्री पुष्पदंत भगवान शुक्र ग्रह, के शांतिकारक माने।
शनिग्रह अति उग्र हुआ तो भी, मुनिसुव्रत प्रभु उसको हानें।।
ग्रह राहु अगर होवे अरिष्ट, तो नेमिनाथ का मंत्र जपो।
प्रभु पार्श्वनाथ के चरणों में, ग्रह केतु शांति हेतू प्रणमो।।५।।

ये नव तीर्थंकर नवग्रह की, शांति में हेतू माने हैं।
है दुख का मूल असाता ही, पर बाह्य निमित ग्रह माने हैं।।
जिन भक्ति असाता कर्मों को, साता में परिवर्तित करती।
ग्रह से उत्पन्न सभी बाधा, तब ही तो शांत हुआ करती।।६।।

पूजन-अर्चन के साथ-साथ, ग्रहशांति मंत्र का जाप करो।
जितनी संख्या जिस मंत्र की है, उसको कर मन संताप हरो।।
अपने प्रभु के अतिरिक्त कहीं, मिथ्यामत में मत भरमाना।
दुख संकट आने पर भी कभी, जिनधर्म को भूल नहीं जाना।।७।।

नवग्रहशांति की पूजन कर, नवग्रह का कभी विधान करो।
तीर्थंकर प्रभु के गुण गाकर, निज आतम गुण भंडार भरो।।
निज जन्मकुण्डली में स्थित, ग्रह को भी उच्चस्थान करो।
फिर सूर्य-चन्द्र सम शुभ प्रकाश से, जीवन का उत्थान करो।।८।।

बीसवीं सदी की प्रथम बालसति, गणिनी माता ज्ञानमती।
उनकी शिष्या ''आर्यिका चन्दनामति'' ने यह स्तुती रची।।
पच्चिस सौ तीस वीर संवत्, तिथि फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
निजशांति हेतु ग्रहशांति हेतु, प्रभु पद में अर्पित काव्यकृती।।९।।